मु-तअ़द्दिद सुन्नतों और आदाब के बयान पर मुश्तमिल तालीफ़

सुन्नतें और आदाब

(तरमीम व इज़ाफ़े के साथ)

इस किताब में........

सलाम करने की सुन्नतें और आदाब • सफ़र की सुन्नतें और आदाब • क़र्ज़ देने के फ़ज़ाइल

इन के इलावा भी बहुत से मौज़ूआत

المدينة العلمية (دعوت اسلامی)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج١ص٤٠دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج٥١ص١٣٨دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (**सुन्नतें और आदाब**)

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"हुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´ E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ात से माख़ूज़ मुख़्तलिफ़ सुन्नतों और आदाब के बयान पर मुश्तमिल किताब

सुन्नतें और आदाब

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ اٰلک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : **सुन्नतें और आदाब**
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब)
सिने त़बाअ़त : मुह़र्रमुल ह़राम 1437 सि. हि.
नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद**

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : 0145- 2629385

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के पास, हुब्ली – 580024. फ़ोन : 08363244860

है़दरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, है़दरआबाद फ़ोन : 040 24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"सुन्नतें और आदाब !" के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "12 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ० मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिगै़र अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले खै़र का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आखि़र मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾7﴿ कुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾11﴿ (अपने ज़ाती नुस्खे़ पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾12﴿ किताबत वगै़रा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगै़रा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हु़स्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ[6] शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये

www.dawateislami.net

सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करना दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयों के हुसूल का ज़रीआ़ है । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "**مَنْ اَحَبَّ سُنَّتِیْ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ وَمَنْ اَحَبَّنِیْ کَانَ مَعِیَ فِی الْجَنَّۃِ**" या'नी जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।" (جامع الترمذی، کتاب العلم، الحدیث ۲۶۸۷، ج۴، ص ۳۰۹، مطبوعہ دار الفکر بیروت)

ऐसे नाज़ुक ह़ालात में कि जब दुन्या भर में गुनाहों की यलग़ार, ज़रा-इए़ इब्लाग़ में फ़ह़्ह़ाशी की भरमार और फ़ेशन परस्ती की फिटकार मुसल्मानों की अक्सरिय्यत को बे अ़मल बना चुकी है, नीज़ इ़ल्मे दीन से बे रग़बती और हर ख़ासो आ़म का रुजह़ान सिर्फ़ दुन्यावी ता'लीम की त़रफ़ होने की वज्ह से और दीनी मसाइल से अ़-दमे वाक़िफ़िय्यत की बिना पर हर त़रफ़ जहालत के बादल मंडला रहे हैं, ला दीनियत व बद मज़्हबियत का सैलाब तबाहियां मचा रहा है, गुलशने इस्लाम पर ख़ज़ां के बादल मंडला रहे हैं, हमें अपनी ज़िन्दगी सुन्नतों के सांचे में ढालने की कोशिश करनी चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**مَنْ تَمَسَّکَ بِسُنَّتِیْ عِنْدَ فَسَادِ اُمَّتِیْ فَلَهٗ اَجْرُ مِأَۃِ شَهِیْدٍ**" या'नी फ़सादे उम्मत के वक़्त जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल करेगा उसे सो शहीदों का सवाब अ़त़ा होगा ।"

(کتاب الزھد الکبیر للامام البیہقی، الحدیث ۲۰۷، ج۱، ص ۱۱۸، مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت)

www.dawateislami.net

ज़ेरे नज़र किताब **"सुन्नतें और आदाब"** में तक़रीबन 23 उ़न्वानात के तह़्त सुन्नतें और आदाब बयान किये गए हैं ताकि मुख़्तसर मुत़ा–लए के बा'द भी क़दरे किफ़ायत मा'लूमात ह़ासिल हो सकें। इस किताब को मुरत्तब करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र–ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायह नाज़ तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत व दीगर तालीफ़ात** से भरपूर इस्तिफ़ादा किया गया है। ह़त्तल मक्दूर रिवायात के ह़वाला जात भी लिख दिये गए हैं। सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म–दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना बेह़द मुफ़ीद है।

इस किताब को शो'बए इस्लाह़ी कुतुब मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) के म–दनी इस्लामी भाइयों ने मुरत्तब किया है। इस में आप को जो ख़ूबियां दिखाई दें वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे करम, उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي के फ़ैज़ से हैं और जो ख़ामियां नज़र आएं उन में यक़ीनन हमारी कोताही को दख़्ल है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **म–दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म–दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
1	सलाम करने की सुन्नतें और आदाब	10
2	मुसा–फ़ह़ा और मुआ़–नक़ा की सुन्नतें और आदाब	22
3	बातचीत करने की सुन्नतें और आदाब	30
4	घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब	34
5	सफ़र की सुन्नतें और आदाब	42
6	सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	56
7	छींकने की सुन्नतें और आदाब	59
8	नाखुन, ह़जामत, मूए बग़ल वग़ैरा की सुन्नतें और आदाब	63
9	ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब	69
10	तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब	72
11	ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब	78
12	ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है	82
13	खाने की सुन्नतें और आदाब	89
14	पानी पीने की सुन्नतें और आदाब	95
15	चलने की सुन्नतें और आदाब	97
16	बैठने की सुन्नतें और आदाब	99
17	लिबास पहनने की सुन्नतें और आदाब	102

www.dawateislami.net

18	जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब	104
19	सोने जागने की सुन्नतें और आदाब	106
20	मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब	108
21	इमामे के फ़ज़ाइल	111
22	क़र्ज़ देने के फ़ज़ाइल	114
23	मरीज़ की इयादत करने का सवाब	118
24	मआख़िज़ो मराजेअ़	121
25	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब	123
26	याद दाश्त का सफ़ह़ा	125

ग़म ख़्वारी का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

जो शख़्स अपने किसी (मुसल्मान) भाई की मुसीबत में ता'ज़ियत करता (या'नी तसल्ली देता) है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाएगा।

(الترغیب والترھیب، ج٤،ص٣٤٤)

www.dawateislami.net

सलाम करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

सलाम करना **हमारे प्यारे आक़ा, ताजदारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 88), बद क़िस्मती से आज कल येह **सुन्नत** भी ख़त्म होती नज़र आ रही है। इस्लामी भाई जब आपस में मिलते हैं तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ से इब्तिदा करने के बजाए "आदाब अ़र्ज़", "क्या ह़ाल है ?" ,"मिज़ाज शरीफ़", "सुब्ह़ बख़ैर","शाम बख़ैर" वग़ैरा वग़ैरा अ़जीबो ग़रीब कलिमात से इब्तिदा करते हैं, येह **ख़िलाफ़े सुन्नत** है। रुख़्सत होते वक़्त भी "ख़ुदा ह़ाफ़िज़", "गुडबाय","टाटा" वग़ैरा कहने के बजाए सलाम करना चाहिये। हां रुख़्सत होते हुए اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ के बा'द अगर ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कह दें तो ह़रज नहीं। **सलाम** की चन्द सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) सलाम के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ यानी तुम पर सलामती हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मतें और ब-र-कतें नाज़िल हों।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 409)

(2) सलाम करने वाले को उस से बेहतर जवाब देना चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَاِذَا حُیِّیۡتُمۡ بِتَحِیَّۃٍ فَحَیُّوۡا بِاَحۡسَنَ مِنۡهَاۤ اَوۡ رُدُّوۡهَا ؕ (پ۵، النسا:۸۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो।

(3) सलाम के जवाब के बेहतरीन अल्फ़ाज़ येह हैं : وَعَلَیۡکُمُ السَّلَامُ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ या'नी और तुम पर भी सलामती हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मतें और ब-र-कतें नाज़िल हों।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 409)

(4) सलाम करना ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیۡہِ السَّلَام **की भी सुन्नत है।** (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 313) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हु़ज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया तो उन्हें हुक्म दिया कि जाओ और फ़िरिश्तों की उस बैठी हुई जमाअ़त को सलाम करो। और ग़ौर से सुनो ! कि वोह तुम्हें क्या जवाब देते हैं। क्यूं कि वोही तुम्हारा और तुम्हारी औलाद का सलाम है। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیۡہِ السَّلَام ने फ़िरिश्तों से कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ। तो उन्हों ने जवाब दिया : "اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ" और उन्हों ने "وَرَحۡمَۃُ اللّٰہِ" के अल्फ़ाज़ ज़ाइद कहे।" (صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب بدء السلام، الحدیث ۶۲۲۷، ج ۴، ص ۱۶۴)

(5) आ़म त़ौर पर मा'रूफ़ येही है कि "اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ" ही सलाम है। मगर सलाम के दूसरे भी बा'ज़ सीग़े हैं। म-सलन कोई आ कर सिर्फ़ कहे "सलाम" तो भी सलाम हो जाता है और "सलाम" के जवाब में "सलाम" कह दिया, या "اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ"

www.dawateislami.net

ही कह दिया, या सिर्फ़ "وَعَلَيْكُمْ" कह दिया तो भी जवाब हो गया। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 93)

(6) सलाम करने से आपस में महब्बत पैदा होती है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम जन्नत में दाख़िल नहीं होगे जब तक तुम ईमान न लाओ और तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत न करो। क्या मैं तुम को एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिस पर तुम अ़मल करो तो एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो। अपने दरमियान सलाम को आ़म करो।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی افشاء السلام، الحدیث ۵۱۹۳، ج۴، ص۴۴۸)

(7) हर मुसल्मान को सलाम करना चाहिये ख़्वाह हम उसे जानते हों या न जानते हों। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक आदमी ने हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया, इस्लाम की कौन सी चीज़ सब से बेहतर है ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कि तुम खाना खिलाओ (मिस्कीनों को) और सलाम कहो हर शख़्स को ख़्वाह तुम उस को जानते हो या नहीं।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب السلام للمعرفۃ وغیر المعرفۃ، الحدیث ۶۲۳۶، ج۴، ص۱۶۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो जब **बस** में सुवार हों, किसी **अस्पताल** में जाना पड़ जाए, किसी **होटल** में दाख़िल हों, जहां लोग फ़ारिग़ बैठे हों, जहां जहां मुसल्मान इकट्ठे हों, सलाम कर दिया करें। येह दो अल्फ़ाज़ ज़बान पर बहुत ही हलके हैं मगर इन के फ़वाइदो स-मरात बहुत ही ज़ियादा हैं।

www.dawateislami.net

(8) बा'ज़ सहाबा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان सिर्फ़ सलाम की ग़रज़ से बाज़ार में जाया करते थे । ह़ज़रते तुफ़ैल बिन उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से मरवी है कि वोह अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के पास जाते तो वोह उन को साथ ले कर बाज़ार की त़रफ़ चल पड़ते । रावी कहते हैं जब हम चल पड़ते तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ जिस रद्दी फ़रोश, दुकान दार या मिस्कीन के पास से गुज़रते तो उस को सलाम कहते । ह़ज़रते तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ कहते हैं, एक दिन मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के पास गया तो उन्हों ने मुझे बाज़ार चलने को कहा । मैं ने अ़र्ज़ किया, बाज़ार जा कर क्या करेंगे ? वहां आप न तो ख़रीदारी के लिये रुकते हैं, न सामान के मु-तअ़ल्लिक़ पूछते हैं, न भाव करते हैं और न बाज़ार की मजलिस में बैठते हैं, मेरी तो गुज़ारिश येह है कि यहीं हमारे पास तशरीफ़ रखें । हम बातें करेंगे । फ़रमाया :"ऐ बड़े पेट वाले ! (सय्यिदुना तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का पेट बड़ा था) हम सिर्फ़ सलाम की ग़रज़ से जाते हैं । हम जिस से मिलते हैं उस को सलाम कहते हैं ।"

(ریاض الصالحین، کتاب السلام، باب فضل السلام والامر بافشاءہ، الحدیث ۸۵۰، ص ۲۴۹)

(9) बातचीत शुरूअ़ करने से पहले ही सलाम करने की आ़दत बनानी चाहिये । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَلسَّلَامُ قَبۡلَ الۡکَلَامِ" या'नी सलाम बातचीत से पहले है ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان...الخ، باب ماجاء فی السلام...الخ، ج ۴، ص ۳۲۱)

(10) छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े ज़ियादा को और सुवार पैदल को सलाम करने में पहल करें । सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है,

www.dawateislami.net

सुवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, और थोड़े लोग ज़ियादा को और छोटा बड़े को सलाम करे।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب یسلم الراکب علی الماشی والقلیل علی الکثیر ،الحدیث ۲۱۶۰،ص ۱۱۹۱)

(11) पीछे से आने वाला आगे वाले को सलाम करे।

(الفتاوی الہندیہ، کتاب الکراہیۃ، باب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج ۵، ص ۳۲۵)

(12) जब कोई किसी का सलाम लाए तो इस त़रह़ जवाब दें "عَلَیْکَ وَعَلَیْہِ السَّلَام" या'नी "तुझ पर भी और उस पर भी सलाम हो।" ह़ज़रते ग़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरवाज़े पर बैठे हुए थे, एक आदमी ने बताया कि मेरे वालिदे माजिद ने मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास भेजा और फ़रमाया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरा सलाम अ़र्ज़ कर। उस ने कहा, मैं आप (हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो गया और मैं ने अ़र्ज़ की, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे वालिद साहि़ब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ करते हैं। हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "عَلَیْکَ وَعَلٰی اَبِیْکَ السَّلَام" या'नी तुझ पर और तेरे बाप पर सलाम हो।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرجل یقول فلان یقرئک السلام، الحدیث ۵۲۳۱، ج ۴، ص ۴۵۸)

(13) सलाम में पहल करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है। ह़ज़रते अबू उमामा सदी बिन इ़जलान अल बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगों में अल्लाह तआ़ला के ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स है जो उन्हें पहले सलाम करे।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی فضل من بدء بالسلام، الحدیث ۵۱۹۷، ج ۴، ص ۴۴۹)

www.dawateislami.net

हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, अर्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो आदमी आपस में मिलें तो कौन पहले सलाम करे ? फ़रमाया : "जो उन में अल्लाह तआ़ला के ज़ियादा क़रीब हो ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب فضل الذی یبدء بالسلام، الحدیث ۲۸۰۳، ج ۴، ص ۳۱۸)

(14) सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है ।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं, फ़रमाया : "पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है ।" (شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، الحدیث ۸۷۸۶، ج ۶، ص ۴۳۳)

(15) जब घर में दाख़िल हों तो घर वालों को सलाम किया करें इस से घर में ब-र-कत होती है । और अगर ख़ाली घर में दाख़िल हों तो "اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ" कहें या'नी "ऐ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो ।"

हज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर मोमिन के घर में सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक तशरीफ़ फ़रमा रहती है । (شرح شفاء، الباب الرابع، ج ۲، ص ۱۱۸)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो सलाम कहो, येह तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये ब-र-कत का बाइ़स होगा ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب ماجآء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، الحدیث ۲۷۰۷، ج ۴، ص ۳۲۰)

घर में जब दाख़िल हों उस वक़्त भी सलाम करें और जब रुख़्सत होने लगें, उस वक़्त भी सलाम करें । हज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस वक़्त तुम घर में दाख़िल हो अपने घर के लोगों को सलाम कहो। जब अपने घर वालों से निकलो तो सलाम के साथ रुख़्सत हो।"

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الادب، باب السلام، الفصل الثانی، الحدیث ۴۶۵۱، ج۲، ص۱۶۵)

(16) आज कल अगर कोई किसी मह़फ़िल, इज्तिमाअ़ या मजलिस वग़ैरा में आ कर सलाम कर भी देता है तो जाते हुए "मैं चलता हूं", "ख़ुदा ह़ाफ़िज़", "अच्छा", "बाय बाय", वग़ैरा कलिमात कहता है लिहाज़ा मजलिस के इख़्तिताम पर **इन सब अल्फ़ाज़ के बजाए सलाम किया करें।** चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं : "जिस वक़्त तुम में से कोई किसी मजलिस की त़रफ़ पहुंचे, सलाम कहे। अगर ज़रूरत मह़सूस करे, वहां बैठ जाए। फिर जब खड़ा हो सलाम कहे इस लिये कि पहला सलाम दूसरे से ज़ियादा बेहतर नहीं है।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی التسلیم عند القیام وعند القعود، الحدیث ۲۷۱۵، ج۴، ص۳۲۴)

(17) अगर कुछ लोग जम्अ़ हैं एक ने आ कर اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा। तो किसी एक का जवाब दे देना काफ़ी है। अगर एक ने भी न दिया तो सब गुनहगार होंगे। अगर सलाम करने वाले ने किसी एक का नाम ले कर सलाम किया या किसी को मुख़ात़ब कर के सलाम किया तो अब उसी को जवाब देना होगा। दूसरे का जवाब काफ़ी न होगा।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, ह़िस्सा : 16, स. 89)

ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है "जब

www.dawateislami.net

कोई शख़्स गुज़रते हुए सलाम कह दे और बैठने वालों में से एक शख़्स जवाब दे तो सब लोगों की त़रफ़ से किफ़ायत कर जाता है।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجآء فی رد واحد عن الجماعۃ، الحدیث ۵۲۱۰، ج۴، ص۴۵۲)

(18) اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहने से दस नेकियां, اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ कहने से बीस नेकियां जब कि اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ कहने से तीस नेकियां मिलती हैं। **चुनान्चे** ह़ज़रते इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक आदमी हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, और उस ने अ़र्ज़ किया, اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, दस नेकियां लिखी गई हैं। फिर दूसरा ह़ाज़िर हुवा उस ने अ़र्ज़ किया, اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ وَرَحْمَةُ اللہ। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को जवाब दिया, वोह भी बैठ गया, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बीस नेकियां लिखी गई हैं। फिर एक और आदमी ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा, उस ने अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को जवाब दिया और फ़रमाया, तीस नेकियां हैं।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب ما فی فضل السلام، الحدیث ۲۶۹۸، ج۴، ص۳۱۵)

(19) आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 409 पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ और इस से बेहतर وَرَحْمَةُ اللہ मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَکَاتُہٗ शामिल करना और इस पर ज़ियादत नहीं। फिर **सलाम करने वाले ने जितने अल्फ़ाज़ में सलाम किया है जवाब में उतने का**

www.dawateislami.net

इआदा तो ज़रूर है और अफ़्ज़ल येह है कि जवाब में ज़ियादा कहे । उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ कहे । और अगर उस ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ الله कहा तो येह وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَكَاتُهٗ तक कहा **तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं ।** وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

(20) जो सो रहे हों उन को सलाम न किया जाए बल्कि सिर्फ़ जागने वालों को सलाम करें चुनान्चे ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को तशरीफ़ लाते तो सलाम कहते । आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सोने वालों को न जगाते और जो जाग रहे होते उन को आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सलाम इर्शाद फ़रमाते । पस एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इसी त़रह़ सलाम फ़रमाया जिस त़रह़ फ़रमाया करते थे ।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اکرام الضیف وفضل ایثارہ، الحدیث ۲۰۵۵، ص ۱۱۳۶)

जल्वए यार इधर भी कोई फेरा तेरा !
ह़सरतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा !

(ज़ौक़े ना'त)

(21) ज़बान से सलाम करने के बजाए सिर्फ़ उंग्लियों या हथेली के इशारे से सलाम न किया जाए ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 92)

ह़ज़रते अ़म्र बिन शुऐ़ब ब वासित़ा वालिद अपने दादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हमारे ग़ैर से मुशा–बहत पैदा करने वाला हम में से नहीं, यहूदो नसारा के मुशाबेह न बनो, यहूदियों का सलाम उंग्लियों के

www.dawateislami.net

इशारे से है और ईसाइयों का सलाम हथेलियों के इशारे से ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجآء فی کراهیة اشارة الید بالسلام، الحدیث۲۷۰۴، ج۴، ص۳۱۹)

अगर किसी ने ज़बान से सलाम के अल्फ़ाज़ कहे और साथ ही हाथ भी उठा दिया तो फिर मुज़ा-यक़ा नहीं ।

(अह्‌कामे शरीअ़त, स. 60)

(22) सलाम इतनी ऊंची आवाज़ से करें कि जिस को किया हो वोह सुन ले ।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 90)

(23) सलाम का फ़ौरन जवाब देना वाजिब है । अगर बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनाहगार होगा और सिर्फ़ जवाब देने से गुनाह मुआ़फ़ नहीं होगा, तौबा भी करना होगी ।

(ردالمحتار مع درمختار، ج۹، ص۶۸۳)

(24) जवाब इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले ।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 92)

(25) ग़ैर मुस्लिम को सलाम न करें वोह अगर सलाम करे तो उस का जवाब वाजिब नहीं, जवाब में फ़क़त "وَعَلَيْكُمْ" कह दें । (बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 90)

(26) सलाम करते वक़्त ह़द्दे रुकूअ़ तक (इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाएं) **झुक जाना ह़राम है अगर इस से कम झुके तो मक्रूह ।**

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 92)

बद क़िस्मती से आज कल आ़म तौ़र पर सलाम करते वक़्त

www.dawateislami.net

लोग झुक जाते हैं। अलबत्ता किसी बुज़ुर्ग के हाथ चूमने में ह़रज नहीं बल्कि सवाब है और येह बिग़ैर झुके मुम्किन नहीं यहां ज़रूरत है। जब कि सलाम के वक़्त झुकने की ह़ाजत नहीं।

(27) बुढ़िया का जवाब आवाज़ से दें और जवान औ़रत के सलाम का जवाब इतना आहिस्ता दें कि वोह न सुने। अलबत्ता इतनी आवाज़ लाज़िमी है कि जवाब देने वाला खुद सुन ले। (बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, ह़िस्सा : 16, स. 90)

(28) जब दो इस्लामी भाई मुलाक़ात करें तो सलाम करें और अगर दोनों के बीच में कोई सुतून, कोई दरख़्त या दीवार वग़ैरा दरमियान में ह़ाइल हो जाए फिर जैसे ही मिलें दोबारा सलाम करें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई को मिले तो उस को सलाम करे और अगर इन के दरमियान दरख़्त, दीवार या पथ्थर वग़ैरा ह़ाइल हो जाए और वोह फिर उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرجل یفارق الرجل....الخ، الحدیث ۵۲۰۰، ج ۴، ص ۴۵۰)

(29) ख़त़ में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूंकि जवाबे सलाम फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त़ का जवाब देने में कुछ न कुछ ताख़ीर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ जब ख़त़ पढ़ा करते तो ख़त़

www.dawateislami.net

में जो "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ" लिखा होता, उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़्मून पढ़ते ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 92)

(30) अगर किसी ने आप को कहा, "फ़ुलां को मेरा सलाम कहना" तो आप ख़ुद उसी वक़्त जवाब न दे दें । आप का जवाब देना कोई मा'नी नहीं रखता बल्कि जिस के बारे में कहा है उस से कहे कि फ़ुलां ने आप को सलाम कहा है ।

(31) अगर किसी ने आप से कहां कि फ़ुलां ने आप को सलाम कहा है ।

अगर सलाम लाने वाला और भेजने वाला दोनों मर्द हों तो यूं कहें : عَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَام अगर दोनों औ़रतें हों तो कहें عَلَيْكِ وَعَلَيْهَا السَّلَام अगर पहुंचाने वाला मर्द और भेजने वाली औ़रत हो عَلَيْكَ وَعَلَيْهَا السَّلَام अगर पहुंचाने वाली औ़रत हो और भेजने वाला मर्द हो عَلَيْكِ وَعَلَيْهِ السَّلَام (इन सब का तजरमा येही है "तुझ पर भी सलाम हो और उस पर भी")

(32) जब आप मस्जिद में दाख़िल हों और इस्लामी भाई तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हों या इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठे हों उन को सलाम न करें । येह सलाम का मौक़अ़ नहीं न उन पर जवाब वाजिब है । (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، باب السابع فى السلام وتشميت العاطس، ج٥، ص٣٢٥)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़हा 399 पर लिखते हैं : ज़ाकिर पर सलाम करना मुत्लक़न मन्अ़ है और अगर कोई करे तो ज़ाकिर को इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे । हां अगर किसी के सलाम या जाइज़ कलाम का जवाब

www.dawateislami.net

न देना उस की दिल शिकनी का मूजिब (सबब) हो तो जवाब दे कि मुसल्मान की दिलदारी वज़ीफ़े में बात न करने से अहम व आ'ज़म है।

(33) कोई इस्लामी भाई दर्सो तदरीस या इल्मी गुफ़्त-गू या सबक़ की तक्रार में है उस को सलाम न करें।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हिस्सा : 16, स. 91)

(34) इज्तिमाअ़ में बयान हो रहा है, इस्लामी भाई सुन रहे हैं आने वाला सलाम न करे।

(35) जो पेशाब, पाख़ाना कर रहा है, या पेशाब करने के बा'द ढेला लिये जा-ए पेशाब सुखाने के लिये टहल रहा है, गुस्ल ख़ाने में बरह्ना नहा रहा है, गाना गा रहा है, कबूतर उड़ा रहा है या खाना खा रहा है इन सब को सलाम न करें।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हिस्सा : 16, स. 91)

(36) जिन सूरतों में सलाम करना मन्अ़ है अगर किसी ने कर भी दिया तो इन पर जवाब वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हिस्सा : 16, स. 91)

(37) खाना खाने वाले को सलाम कर दिया तो मुंह में उस वक़्त लुक़्मा नहीं तो जवाब दे दे।

(38) साइल (भिकारी) के सलाम का जवाब वाजिब नहीं (जब कि भीक मांगने की ग़रज़ से आया हो)।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हिस्सा : 16, स. 90)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सलाम की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मुसा-फ़ह़ा और मुअ़ा-नक़ा की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब दो इस्लामी भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें और फिर दोनों हाथ मिलाएं कि ब वक़्ते मुलाक़ात मुसा-फ़ह़ा करना सुन्नते सह़ाबा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان बल्कि सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 355) ह़ज़रते अबुल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से अ़र्ज़ किया, कि मुसा-फ़ह़ा (हाथ मिलाना) हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان में मुरव्वज था ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया, ''हां ।''

(صحیح البخاری، کتاب الاستیذان، باب المصافحہ، الحدیث ۶۲۶۳، ج۴، ص۱۷۷)

(1) आपस में हाथ मिलाने से कीना ख़त्म होता है और एक दूसरे को तोह़फ़ा देने से मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है जैसा कि ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''एक दूसरे के साथ मुसा-फ़ह़ा करो, इस से कीना जाता रहता है और हदिय्या भेजो आपस में मह़ब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी ।''

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الادب، باب ماجآء فی المصافحہ، الحدیث ۴۶۹۳، ج۲، ص۱۷۱)

(2) मुलाक़ात के वक़्त मुसा-फ़ह़ा करने वालों के लिये दुआ़ की क़बूलिय्यत और हाथ जुदा होने से क़ब्ल ही मग़्फ़िरत की बिशारत है । चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जब दो मुसल्मानों ने मुलाक़ात की और एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया

www.dawateislami.net

(या'नी मुसा-फ़ह़ा किया) तो अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है कि उन की दुआ़ को ह़ाज़िर कर दे (या'नी क़बूल फ़रमा ले) और हाथ जुदा न होने पाएंगे कि इन की मग़्फ़िरत हो जाएगी। और जो लोग जम्अ़ हो कर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र करते हैं और सिवाए रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के उन का कोई मक़्सद नहीं तो आस्मान से मुनादी निदा देता है कि खड़े हो जाओ ! तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गई, तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث ۱۲۴۵۴، ج ۴، ص ۲۸۶)

(3) इस्लामी भाइयों के आपस में मुसा-फ़ह़ा करने की ब-र-कत से दोनों के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसल्मान जब अपने मुसल्मान भाई से मिले और "हाथ पकड़े" (या'नी मुसा-फ़ह़ा करे) तो उन दोनों के गुनाह ऐसे गिरते हैं जैसे तेज़ आंधी के दिन में खुश्क दरख़्त के पत्ते। और उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।"

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحۃ والمعانقۃ، الحدیث ۸۹۵۰، ج ۶، ص ۴۷۳)

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और मुसा-फ़ह़ा करते हैं और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحۃ والمعانقۃ، الحدیث ۸۹۴۴، ج ۶، ص ۴۷۱)

(4) सब से पहले य-मनी इस्लामी भाइयों ने सरकारे पुर वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुसा-फ़ह़ा करने (हाथ मिलाने) **का शरफ़ ह़ासिल किया।** चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास अहले यमन आए हैं और वोह पहले आदमी हैं जिन्हों ने आ कर मुसा-फ़ह़ा किया।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستیذان والادب، باب ماجآء فی المصافحہ، الحدیث ۲۷۴۰، ج ۴، ص ۳۳۴)

(5) सलाम के साथ साथ मुसा-फ़ह़ा करने से सलाम की तक्मील होती है। ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मरीज़ की पूरी इयादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ? और पूरी तहिय्यत (सलाम करना) येह है कि मुसा-फ़ह़ा भी किया जाए।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستیذان والادب، باب ماجآء فی المصافحہ، الحدیث ۲۷۴۰، ج ۴، ص ۳۳۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना हुस्ने अख़्लाक़ में से है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "लोगों को तुम अपने अम्वाल से ख़ुश नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारी ख़न्दा पेशानी और ख़ुश अख़्लाक़ी उन्हें ख़ुश कर सकती हैं।" (شعب الایمان، باب حسن الخلق، فصل فی طلاقۃ الوجہ، الحدیث ۸۰۵۴، ج ۶، ص ۲۵۳)

(6) ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 359) ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ज़ैद बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीना आए और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर में थे, ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां आए और दरवाज़ा खट-खटाया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर कपड़ा खींचते हुए उन की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। उन से

www.dawateislami.net

मुआ़-नक़ा किया और उन को बोसा दिया।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجآء فی المعانقۃ والقبلۃ، الحدیث ۲۷۴۱، ج ۴، ص ۳۳۵)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को त़लब फ़रमाया, जब वोह ह़ाज़िर हुए तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़र्ते शफ़्क़त से ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को गले लगा लिया। चुनान्चे ह़ज़रते अय्यूब बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ एक साह़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा, मैं ने अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से पूछा, जिस वक़्त तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलते थे क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारे साथ मुसा-फ़ह़ा फ़रमाते थे ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नहीं मिला मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे साथ मुसा-फ़ह़ा करते (या'नी मैं ने जब भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसा-फ़ह़ा ज़रूर फ़रमाया) एक दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ पैग़ाम भेजा। मैं अपने घर मौजूद नहीं था। जब मैं आया मुझे ख़बर दी गई। मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तख़्त पर रौनक़ अफ़रोज़ थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे गले लगा लिया। येह बहुत बेहतर हुवा और बेहतर। (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی المعانقۃ، الحدیث ۵۲۱۴، ج ۴، ص ۴۵۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुए तो उन को भी गले से लगाया चुनान्चे ह़ज़रते शअ़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

जा'फ़र बिन अबी तालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मिले तो गले से लगा लिया और उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया ।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی قبلہ ما بین العینین ،الحدیث ۵۲۲۰، ج۴،ص ۴۵۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

खुश नसीब सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रहमत भरे हाथों को चूमने की सआदत भी हासिल करते थे । हज़रते इब्ने उमर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से एक वाक़िआ मरवी है जिस में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हम हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब हुए और हम ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथों को बोसा दिया ।

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الید، الحدیث ۵۲۲۳، ج۴،ص ۴۵۶)

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये

सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

सहाबए किराम सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस हाथ पाउं चूमते थे

हज़रते ज़ारअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब क़बीलए अ़ब्दिल क़ैस का वफ़्द सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा, येह भी उस वक़्त वफ़्द में शरीक थे । आप फ़रमाते हैं कि जब हम अपनी मन्ज़िलों से मदीना शरीफ़ पहुंचे तो जल्दी जल्दी सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और क़दम शरीफ़ को बोसा दिया । (سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الرجل، الحدیث ۵۲۲۵، ج۴،ص ۴۵۶)

www.dawateislami.net

सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिया के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی की दस्त बोसी यक़ीनन दीनो दुन्या की ख़ैरो ब-र-कत का बाइस बनती है। एक दफ़्आ़ किसी ने एक बुज़ुर्ग को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देखा तो उन से पूछा, "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟" या'नी अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? कहा, दुन्या का हर मुआ़-मला अच्छा और बुरा मेरे आगे रख दिया और बात यहां तक पहुंच गई कि हुक्म हुवा, इसे दोज़ख़ में ले जाओ ! इस हुक्म पर अ़मल होने ही वाला था कि फ़रमान हुवा, ठहरो ! एक दफ़्आ़ इस ने जामेअ़ दिमश्क़ में ख़्वाजा शरीफ़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दस्ते मुबारक को चूमा था। उस दस्त बोसी की ब-र-कत से हम ने इसे मुआ़फ़ किया।"

(اسرار اولیاء مع ہشت بہشت، ص۱۱۳)

؎ رحمت حق "بہا" نہ می جوید　　رحمت حق "بہانہ" می جوید

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहा या'नी क़ीमत त़लब नहीं करती, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो बहाना ढूंडती है।

मज़ीद शैख़ुल मशाइख़ बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन बहुत सारे गुनाहगार, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی की दस्त बोसी की ब-र-कत से बख़्शे जाएंगे और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात ह़ासिल करेंगे। (اسرار اولیاء مع ہشت بہشت، ص۱۱۳)

(7) दोनों हाथों से मुसा-फ़ह़ा करें।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 98)

www.dawateislami.net

(8) जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार मुसा-फ़ह़ा करना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 97)

(9) रुख़्सत होते वक़्त भी मुसा-फ़ह़ा करें। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى लिखते हैं : इस के मस्नून होने की तसरीह़ नज़रे फ़क़ीर से नहीं गुज़री मगर अस्ल मुसा-फ़ह़ा का जवाज़ ह़दीस से साबित है तो इस को भी जाइज़ ही समझा जाएगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 98)

(10) फ़क़त उंग्लियों के छूने का नाम मुसा-फ़ह़ा नहीं है सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसा-फ़ह़ा किया जाए और दोनों के हाथों के माबैन कपड़ा वग़ैरा कोई चीज़ ह़ाइल न हो।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 98)

(11) मुसा-फ़ह़ा करते वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रुमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, ह़िस्सा : 16, स. 98)

(12) मुस्कुरा कर गर्म जोशी से मुसा-फ़ह़ा करें। दुरूद शरीफ़ पढ़ें और हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ें "يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए)।

(13) हर नमाज़ के बा'द लोग आपस में मुसा-फ़ह़ा करते हैं येह जाइज़ है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۸۲)

(14) गले मिलने को मुआ़-नक़ा कहते हैं और येह भी सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, ह़िस्सा : 16, स. 98)

www.dawateislami.net

(15) सिर्फ़ तहबन्द बांध कर या पाजामा पहने हों उस वक़्त मुआ़-नक़ा न करें बल्कि कुर्ता पहना हुवा हो या कम अज़ कम चादर लिपटी हुई होनी चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 98)

(16) ईदैन में मुआ़-नक़ा करना जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, हि़स्सा : 16, स. 90)

(17) आ़लिमे दीन के हाथ पाउं चूमना जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 99)

(18) मुसा-फ़ह़े के बा'द अपना ही हाथ चूम लेना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 99)

(19) हाथ पाउं वग़ैरा चूमने में येह एह़तियात ज़रूरी है कि महल्ले फ़ितना न हो, अगर مَعَاذَاللّٰه शह्वत के लिये किसी इस्लामी भाई से मुसा-फ़ह़ा या मुआ़-नक़ा किया, हाथ पाउं चूमे या نَعُوْذُبِاللّٰه पेशानी का बोसा लिया तो येह ना जाइज़ है।

(मुलख़्ख़स़न बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 98)

(20) वालिदैन के हाथ पाउं भी चूम सकते हैं।

(21) आ़लिमे बा अ़मल और नेक इस्लामी भाई की आमद पर ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जाना जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है मगर वोह आ़लिम या नेक शख़्स बज़ाते ख़ुद अपने आप को ता'ज़ीम का अह्ल तसव्वुर न करे और येह तमन्ना न करे कि लोग मेरे लिये खड़े हो जाया करें। और अगर कोई ता'ज़ीमन खड़ा न हो तो हरगिज़ हरगिज़ दिल में कदूरत (मैल) न लाएं।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 719)

www.dawateislami.net

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास और ख़ुशदिली के साथ हर मुसल्मान को सलाम करने और इन के साथ ख़न्दा पेशानी के साथ मुसा-फ़ह़ा करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

रोज़ी का सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) आता था, और दूसरा कोई काम करता था। (एक रोज़) कारीगर भाई ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे कामकाज में हाथ बटाना चाहिये) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهٖ)) शायद ! "तुझे इस की ब-र-कत से रोज़ी मिल रही है।"

"سنن الترمذي"، أبواب الزهد، باب في التوكل على الله، الحديث: ٢٣٤٥، ص١٨٨٧.

و "اشعة اللمعات"، كتاب الرقاق، باب التوكل و الصبر، الفصل الثالث، ج٤، ص٢٦٢.

www.dawateislami.net

बातचीत करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस ज़िन्दगी में हमें हर वक़्त बातचीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है। बल्कि हम लोग बिला ज़रूरत भी हर वक़्त बोलते रहते हैं हालां कि येह बिला ज़रूरत बोलना बहुत ही नुक़्सान देह है, ग़ैर ज़रूरी गुफ़्त-गू करने से ख़ामोश रहना अफ़्ज़ल है। लिहाज़ा हमारे प्यारे म-दनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बातचीत के सिल्सिले में सुन्नतें और आदाब और ख़ामोशी के फ़ज़ाइल वग़ैरा यहां पर बयान किये जाते हैं।

(1) सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **गुफ़्त-गू इस त़रह़ दिल नशीन अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता चुनान्चे** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदह आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे, हर सुनने वाला उस को याद कर लेता था।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشۃ، الحدیث ۲۶۲۶۹، ج ۱۰، ص ۱۱۵)

(2) मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बातचीत कीजिये। छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दोनों के नज़्दीक आप मुअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे।

(3) चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में दोस्त आपस में करते हैं, मा'यूब है।

(4) दौराने गुफ़्त-गू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना

www.dawateislami.net

ठीक नहीं क्यूं कि ताली, सीटी बजाना मह्ज़ खेलकूद, तमाशा और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 9, स. 549)

(5) बातचीत करते वक़्त दूसरे के सामने बार बार नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं। इस से दूसरों को घिन आती है।

(6) जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत़्मीनान से सुनें। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ न कर दें।

(7) कोई हक्ला कर बात करता हो तो उस की नक़्ल न उतारें कि इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है।

(8) बातचीत करते हुए क़ह्क़हा न लगाएं कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया** (क़ह्क़हा या'नी इतनी आवाज़ से हंसना कि दूसरों तक आवाज़ पहुंचे।)

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 402)

(9) ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से वक़ार भी मजरूह़ होता है।

(10) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जब तुम किसी दुन्या से बे रग़्बत शख़्स को देखो और उसे कम गो पाओ तो उस के पास ज़रूर बैठो क्यूं कि उस पर ह़िक्मत का नुज़ूल होता है।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب الزہد فی الدنیا، الحدیث ۴۱۰۱، ج ۴، ص ۴۲۲)

(11) ह़दीसे पाक में है **"जो चुप रहा उस ने नजात पाई।"** (شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، فصل فی السکوت عما لایعنیہ، الحدیث ۴۹۸۳، ج ۴، ص ۲۵۴، جامع الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (نمبر۵) الحدیث ۲۵۰۹، ج ۴، ص ۲۲۵)

(12) किसी से जब बातचीत की जाए तो उस का

www.dawateislami.net

कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये । और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ बात की जाए। जैसा कि कहा जाता है, "كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ" (या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो ।) या'नी इस त़रह़ की बातें न की जाएं कि दूसरों की समझ में न आएं, अल्फ़ाज़ भी सादा साफ़ साफ़ हों, मुश्किल तरीन अल्फ़ाज़ भी इस्ति'माल न किये जाएं कि इस त़रह़ अगले पर आप की इ़ल्मिय्यत की धाक तो बैठ जाएगी मगर मुद्दआ़ ख़ाक भी समझ न आएगा ।

(13) अपनी ज़बान को हमेशा बुरी बातों से रोके रखें । ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नजात क्या है ? फ़रमाया, "अपनी ज़बान को बुरी बातों से रोक रखो ।"

(جامع الترمذی، کتاب الزہد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحدیث ۲۴۱۴، ج ۴، ص ۱۸۲)

(14) मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम ने ज़बान को सह़ीह़ इस्ति'माल किया तो इस का जो कुछ फ़ाएदा होगा वोह सारा ही जिस्म पाएगा और अगर येह सीधी न चली किसी को गाली वग़ैरा दे दी तो ज़बान को कोई तक्लीफ़ हो या न हो पिटाई दीगर आ'ज़ा की होगी । ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के आ'ज़ा झुक कर ज़बान से कहते हैं, हमारे बारे में अल्लाह तआ़ला से डर ! क्यूं कि हम तुझ से मु-तअ़ल्लिक़ हैं। अगर तू सीधी रहेगी, हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी हम भी टेढ़े हो जाएंगे ।" (المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۱۱۹۰۸، ج ۴، ص ۱۹۰)

www.dawateislami.net

(15) आपस में हंसी मज़ाक़ की आ़दत कभी महंगी पड़ जाती है। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आपस में ठठ्ठा मज़ाक़ मत किया करो कि इस त़रह़ (हंसी ही हंसी में) दिलों में नफ़रत बैठ जाती है। और बुरे अफ़आ़ल की बुन्यादें दिलों में उस्तुवार हो जाती हैं।"

(کیمیائے سعادت، رکن سوم مہلکات، باب پیدا کردن ثواب خاموشی، ج ۲، ص ۵۶۳)

(16) बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ करें, गाली गलोच से इज्तिनाब करते रहें और याद रखें कि अपने भाई को गाली देना ह़राम है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 127) और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है। हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बात) से काम लेता है।"

(کیمیائے سعادت، رکن سوم باب فحش، آفت پنجم گفتن است، ج ۲، ص ۵۶۸)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें गुफ़्त-गू करने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

www.dawateislami.net

घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमें हर रोज़ अपने या किसी अ़ज़ीज़ या दोस्त व अह़बाब के घर में जाने की ह़ाजत पड़ती रहती है तो हमें येह मा'लूम होना चाहिये कि घर में दाख़िल होने का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ? किसी के घर में जाएं तो दरवाज़े के सामने खड़े हों या एक त़रफ़ हट कर ? और किस त़रह़ इजाज़त त़लब करें ? अगर इजाज़त न मिले तो क्या करना चाहिये ? दुआ़ पढ़ कर घर से निकलने की क्या क्या ब-र-कतें हैं ? अगर घर में कोई मौजूद न हो तो क्या पढ़ना चाहिये ? घर में दाख़िल होने और इजाज़त त़लब करने वग़ैरा के ह़वाले से मु-तअ़द्दद सुन्नतें और आदाब हैं :

(1) अपने घर में आते हुए भी सलाम करें और जाते हुए भी सलाम करें । हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जब तुम घर में आओ तो घर वालों को सलाम करो और जाओ तो सलाम कर के जाओ ।

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و......الخ فصل فی السلام من خرج من بیتہ، الحدیث ۸۸۴۵، ج ۶، ص ۴۴۷)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 6 सफ़ह़ा 9 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि अव्वल दिन में जब पहली बार घर में दाख़िल होते तो बिस्मिल्लाह और قُلْ هُوَ الله पढ़ लेते, कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है और रिज़्क़ में ब-र-कत भी ।"

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर जो घर में दाख़िल

www.dawateislami.net

होता है, शैतान भी उस के साथ घर में दाख़िल हो जाता है। जैसा कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब आदमी घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो शैतान कहता है : "आज यहां न तुम्हारी रात गुज़र सकती है और न तुम्हें खाना मिल सकता है।" और जब इन्सान घर में बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किये दाख़िल होता है तो शैतान कहता है, आज की रात यहीं गुज़रेगी। और जब खाने के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम नहीं लेता तो वोह कहता है : "तुम्हें ठिकाना भी मिल गया और खाना भी मिल गया।" (صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشراب واحکامھا، الحدیث ۲۰۷۸، ج۴، ص ۱۱۱۶)

(3) जब कोई ख़ुश नसीब अपने घर से बाहर जाते वक़्त बाहर जाने की दुआ पढ़ लेता है तो वोह घर लौटने तक हर बला व आफ़त से मह़फ़ूज़ हो जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में ब-र-कत ही ब-र-कत है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी अपने घर के दरवाज़े से बाहर निकलता है तो उस के साथ दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर होते हैं। जब वोह आदमी कहता है कि "بِسْمِ اللّٰہ" तो वोह फ़िरिश्ते कहते हैं तूने सीधी राह इख़्तियार की। और जब इन्सान कहता है, "لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ" तो फ़िरिश्ते कहते हैं अब तू हर आफ़त से मह़फ़ूज़ है। जब बन्दा कहता है, "تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ" तो फ़िरिश्ते कहते हैं अब तुझे किसी और की मदद की ह़ाजत नहीं, इस के बा'द उस शख़्स के दो शैतान जो उस पर मुसल्लत़ होते हैं वोह उस से मिलते हैं

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते कहते हैं अब तुम इस के साथ क्या करना चाहते हो ? इस ने तो सीधा रास्ता इख़्तियार किया । तमाम आफ़ात से मह़फ़ूज़ हो गया और खुदा عَزَّوَجَلَّ की इमदाद के इलावा दूसरे की इमदाद से बे नियाज़ हो गया ।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب مایدعو بہ الرجل اذا خرج من بیتہ، الحدیث ۳۸۸۶، ج۴، ص۲۹۲)

(4) जब किसी के घर जाना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि पहले अन्दर आने की इजाज़त ह़ासिल कीजिये फिर जब अन्दर जाएं तो पहले सलाम करें फिर बातचीत शुरूअ़ कीजिये । (मुलख़्ख़सन बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 83) ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन मर्तबा इजाज़त त़लब करो अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वरना वापस लौट जाओ ।"

(صحیح مسلم، کتاب الاستئذان والادب، الحدیث ۲۱۵۳، ص ۱۱۸۶)

(5) जो सलाम किये बिग़ैर घर में दाख़िले की इजाज़त मांगे उसे दाख़िले की इजाज़त न दी जाए । ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स सलाम के साथ इब्तिदा न करे उस को इजाज़त न दो ।"

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، فصل فی الاستئذان الحدیث ۸۸۱۶، ج۶، ص ۴۴۱)

घर में दाख़िले की इजाज़त मांगने में एक ह़िक्मत येह भी है कि फ़ौरन घर में बाहर वाले की नज़र न पड़े । आने वाला बाहर से सलाम कर रहा हो, इजाज़त चाह रहा हो और साह़िबे ख़ाना पर्दे वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर ले । ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : "इजाज़त त़लब करने का हुक्म आंख की वज्ह से दिया गया है। (इस लिये कि अहले ख़ाना की निजी ज़िन्दगी के असरार मुन्कशिफ़ न हो सकें।)" (صحیح مسلم،کتاب الادب،باب الاستئذان،الحدیث۲۱۵۶،ص۱۱۸۹)

(6) जब किसी के घर जाना हो इजाज़त मांगना सुन्नत है। बेहतर येह है कि इस त़रह़ इजाज़त मांगें : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 346) ह़ज़रते रिब्ई बिन ह़िराश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, हमें बनू आ़मिर के एक शख़्स ने येह बात बताई कि उस ने ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने अ़र्ज़ किया, क्या मैं दाख़िल हो जाऊं ? ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया : बाहर उस आदमी के पास जाओ और उस को इजाज़त त़लब करने का त़रीक़ा सिखाओ, उस से कहो कि इस त़रह़ कहे, "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ?" उस आदमी ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुन लिया और अ़र्ज़ किया, اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ? तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और वोह अन्दर दाख़िल हुवा।

(سنن ابی داوٗد،کتاب الادب،باب کیف الاستئذان،الحدیث۵۱۷۷،ج۴،ص۴۴۳)

ह़ज़रते कल्दा बिन ह़म्बल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ह़ुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा। मैं जब अन्दर दाख़िल हुवा और सलाम अ़र्ज़ न

www.dawateislami.net

किया तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "लौट जाओ और येह कहो, "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ?"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب کیف الاستئذان، الحدیث ۵۱۷۶، ج ۴، ص ۴۴۲)

(7) अगर कोई शख़्स आप को बुलाने के लिये भेजे और भेजा हुवा शख़्स आप को साथ ले कर जाए तो अब इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं । साथ वाला शख़्स ही ख़ुद "इजाज़त" है जैसा कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस वक़्त तुम में से किसी को बुलाया जाए, और वोह एलची (या'नी क़ासिद) के साथ आए येह उस का इज़्न (इजाज़त) है" एक और रिवायत में है कि आदमी का किसी को बुलाने के लिये भेजना उस की त़रफ़ से इजाज़त है । (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب الرجل اذا دعی أیکون ذلک اذنہ، الحدیث ۵۱۸۹، ج ۴، ص ۴۴۷)

(8) अपनी मौजू-दगी का एह़सास दिलाने के लिये खन्कारना चाहिये जैसा कि मौलाए काएनात ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक मर्तबा रात के वक़्त और एक मर्तबा दिन के वक़्त ह़ाज़िर होता था । जब मैं रात के वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िरी देता आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे लिये खन्कारते ।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستئذان، الحدیث ۳۷۰۸، ج ۴، ص ۲۰۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी के घर जाएं तो दरवाज़े से गुज़रते वक़्त ज़रूरतन दूसरे कमरे की त़रफ़ जाते हुए खन्कार लेना चाहिये ताकि घर के दीगर अफ़राद को हमारी मौजू-दगी का एह़सास हो जाए और वोह आगे पीछे हो सकें ।

www.dawateislami.net

(9) अगर दरवाज़े पर पर्दा न हो तो एक त़रफ़ हट कर खड़े हों । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते तो दरवाज़े के सामने खड़े न होते बल्कि दाईं या बाईं जानिब खड़े होते फिर फ़रमाते ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ'' ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ'' और येह इस लिये कि उन दिनों दरवाज़ों पर पर्दे नहीं होते थे ।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، فصل کم مرۃ یسلم الرجل فی الاستئذان، الحدیث ۵۱۸۶، ج۴، ص۴۴۶)

(10) जब कोई किसी के घर जाए तो अन्दर से जब कोई दरवाज़े पर आए तो पूछे कौन है ? बाहर वाला ''मैं'' न कहे जैसा कि आज कल भी येही रवाज है । बल्कि अपना नाम बताए । जवाबन ''मैं'' कहना सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द नहीं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 83) जैसा कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है फ़रमाया, मैं म-दनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा । और दरवाज़ा खट-खटाया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कौन है ? मैं ने अ़र्ज़ की ''मैं ।'' आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं, मैं क्या ? गोया आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को ना पसन्द फ़रमाया ।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب اذا قال من ذا فقال انا، الحدیث ۶۲۵۰، ج۴، ص۱۷۱)

(11) किसी के घर में झांकना नहीं चाहिये, जैसा कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ानए अक़्दस में तशरीफ़ फ़रमा थे । कि एक शख़्स ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झांका तो आप

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेज़े की नोक उस की त़रफ़ की चुनान्चे वोह पीछे हट गया।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب من اطلع فی دار قوم بغیر اذنھم، الحدیث ۲۷۱۷، ج۴، ص۳۲۵)

इसी त़रह़ किसी मौक़अ़ पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरे दौलत पर जल्वा फ़रमा थे और किसी ने जब सूराख़ से झांक कर देखा तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इज़्हारे नाराज़गी फ़रमाया। जैसा कि ह़ज़रते सह्ल बिन साइदी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक शख़्स ने हुज्रए मुबारक के सूराख़ से झांका। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोहे की कंघी से सरे मुबारक खुजा रहे थे फ़रमाया : अगर मेरी तवज्जोह इस त़रफ़ होती कि तू देख रहा है तो इस लोहे की कंघी को तेरी आंख में चुभो देता। नज़र से बचाव के लिये ही तो इजाज़त त़लब करने का हुक्म है।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب من اطلع فی دار قوم بغیر اذنھم، الحدیث ۲۷۱۷، ج۴، ص۳۲۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

दूसरों के घरों में झांकने से बचने के साथ साथ हमें अपने घरों के दरवाज़े या खिड़कियां बन्द रखनी चाहिएं या उन पर कोई सादा सा पर्दा वग़ैरा डाल देना चाहिये जिस की वज्ह से बे पर्दगी न हो।

(12) घर के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न करें जिस से मेज़बान की दिल आज़ारी हो। हां, अगर ना जाइज़ बात देखें, म-सलन जानदारों की तसावीर वग़ैरा आवेज़ां हों तो अह़सन त़रीक़े से समझा दें। हो सके तो कुछ न कुछ तोह़फ़ा पेश करें ख़्वाह

www.dawateislami.net

कितना ही कम क़ीमत हो, मह़ब्बत बढ़ेगी।

(13) जो कुछ खाने पीने को पेश किया जाए, कोई सह़ीह़ मजबूरी न हो तो ज़रूर क़बूल करें। ना पसन्द हो जब भी मुंह न बिगाड़ें कि मेज़बान की दिल शिकनी होगी।

(14) वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी करें और शुक्रिया भी अदा करें।

(15) सलाम करने के बा'द रुख़सत हों।

(16) घर में अगर कोई न हो तो ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ'' कहें कि मोमिनों के घर में सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक तशरीफ़ फ़रमा होती है। (شرح شفاء، الباب الرابع، ج۲،ص۱۱۸)

(17) जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से त़ाक़त व कुव्वत है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के भरोसे पर।

(مشکوۃ المصابیح، الحدیث ۲۴۴۳، ج۱،ص۴۵۶)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें घर में आने जाने की सुन्नतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

सफ़र की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अक्सरो बेशतर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है बल्कि बहुत से ख़ुश नसीब इस्लामी भाइयों को तो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आ़शिक़ाने रसूल के म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की भी सआ़दत मिलती है। लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ न कुछ सुन्नतें और आदाब सीख लें ताकि इन पर अ़मल कर के हम अपने सफ़र को भी हुसूले सवाब का ज़रीआ़ बना सकें।

(1) मुम्किन हो तो जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है। (اشعۃ اللمعات، ج۵،ص۱۶۱) चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गज़्वए तबूक के लिये जुमा'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमा'रात के दिन रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे। (صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب من اراد غزوۃ فورّی....الخ، الحدیث ۲۹۵۰، ج۲، ص۲۹۶)

(2) अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए कि रात को सफ़र जल्द तै होता है ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "सरकारे मदीना, सुलत़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रात को सफ़र किया करो, क्यूं कि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।"

(سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب فی الدلجۃ، الحدیث ۲۵۷۱، ج۳، ص۴۰)

www.dawateislami.net

(3) अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वोह अपने में से एक को अमीर बना लें ।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الجہاد، باب فی القوم یسافرون......الخ، الحدیث ۲۶۰۹، ج ۳، ص ۵۱،۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

निगराने क़ाफ़िला ख़ुश अख़्लाक़, जज़्बए इख़्लास व ईसार से आरास्ता व पैरास्ता होना चाहिये । अपने हम-सफ़र इस्लामी भाइयों की देखभाल करे । बिलफ़र्ज़ अगर शु-रकाए क़ाफ़िला किसी बात पर नाराज़ भी हो जाएं, आपस में कोई चप-क़लिश या रन्जिश भी हो जाए तो ह़िक्मते अ़-मली के साथ मुआ़-मलात को सुलझा दे मगर अ़दलो इन्साफ़ का दामन भी न छोड़े । नीज़ मामूर इस्लामी भाइयों को भी चाहिये कि जहां तक शरीअ़त के मुत़ाबिक़ निगराने क़ाफ़िला हिदायात दे उन की बजा आ-वरी में हरगिज़ हरगिज़ कोताही न करें । सफ़र में ह़ौसला बुलन्द रखना चाहिये । बा'ज़ अवक़ात सफ़र की थकान के सबब या आपस में इख़्तिलाफ़े राय की वज्ह से कुछ तल्ख़ियां भी पैदा हो जाती हैं । इन मवाक़ेअ़ पर सब्रो तह़म्मुल का दामन न छोड़ें । प्यार व मह़ब्बत से सारे मुआ़-मलात को सुलझाते चले जाएं ।

(4) चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से क़ुसूर मुआ़फ़ करवाएं और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से **मुआ़फ़** कर दें । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 6, स. 19)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत के लिये आए तो वोह उस का उ़ज़्र क़बूल करे, ख़्वाह ह़क़ पर हो या बात़िल पर, जो ऐसा न करे वोह मेरे ह़ौज़ पर नहीं आएगा।" (المستدرک للحاکم، کتاب البر والصلۃ، باب برّ وا اباکم تبرکم....الخ، الحدیث ۷۳۴۰، ج۵، ص۲۱۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत के दिन जब लोग ह़िसाब के लिये खड़े होंगे तो एक मुनादी ए'लान करेगा, "जिस का कुछ ज़िम्मा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निकलता है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए।" (लेकिन कोई खड़ा न होगा) मुनादी फिर दूसरी मर्तबा ए'लान करेगा, "जिस का ज़िम्मा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ निकलता है वोह खड़ा हो।" (लोग ह़ैरानी से पूछेंगे) "अल्लाह की त़रफ़ किसी का ज़िम्मा कैसे निकल सकता है ?" जवाब मिलेगा, "(वोह) जो लोगों को मुआ़फ़ करने वाले थे।" मुनादी फिर तीसरी मर्तबा ए'लान करेगा, "जिस का ज़िम्मा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ निकलता है वोह खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जाए।" पस इतने इतने हज़ार खड़े होंगे और बिग़ैर ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।" (المعجم الاوسط، الحدیث ۱۹۹۸، ج۱، ص۵۴۲)

(5) लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में चार रक्अ़त नफ़्ल اَلْحَمْدُ व قُلْ से पढ़ कर बाहर निकलें, वोह रक्अ़तें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेंगी। फिर अपनी मस्जिद से रुख़्सत हों। अगर वक़्ते मकरूह न हो तो इस में भी दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ लें।

www.dawateislami.net

(6) हम जब भी सफ़र पर रवाना हों तो हमें चाहिये कि हम अपने अहलो माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के ह़वाले कर के जाएं ।** अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ही सब से बेहतर ह़िफ़ाज़त करने वाला है । बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को ज़ैल के कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों :

اَسْتَوْدِعُکَ اللّٰہَ الَّذِیْ لَایُضِیْعُ وَدَائِعَہٗ

तरजमा : मैं तुम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं जो सोंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं करता ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب تشییع الغزوۃ ووداعھم، الحدیث ۲۸۲۵، ج۳، ص۳۷۲)

(7) सफ़रे तिजारत करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि येह पांच सूरतें पढ़ लिया करें ।

(1) **قُلْ یٰۤاَیُّہَاالْکٰفِرُوْنَ** आख़िर तक (2) **اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰہِ وَالْفَتْحُ** आख़िर तक (3) **قُلْ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ** आख़िर तक (4) **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** आख़िर तक (5) **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ** आख़िर तक ।

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : ऐ जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क्या तुम चाहते हो कि जब तुम सफ़र में जाओ तो अपने साथियों में बेहतर और तोशए सफ़र में बढ़ कर रहो । (या'नी सफ़र में ख़ुशह़ाली और फ़ारिगुल बाली नसीब हो) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह पांच सूरतें पढ़ लिया करो ।

(1) **قُلْ یٰۤاَیُّہَاالْکٰفِرُوْنَ** आख़िर तक ।

(2) **اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰہِ وَالْفَتْحُ** आख़िर तक ।

(3) **قُلْ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ** आख़िर तक ।

www.dawateislami.net

(4) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक।
(5) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक।

हर सूरत को ''بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ'' से शुरूअ़ करो और इसी पर ख़त्म करो। (इस त़रह़ इन पांच सूरतों के साथ बिस्मिल्लाह शरीफ़ छ बार पढ़ी जाएगी)।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने इन को पढ़ना शुरूअ़ किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने साथियों में सब से ज़ियादा ख़ुशह़ाल और तोशए सफ़र में फ़ारिग़ुल बाल रहने लगा। (کنزالعمال، کتاب السفر، فصل فی آداب الوداع، آداب متفرقۃ، الحدیث ۱۷۶۴۵، ج۶، ص۳۱۴)

(8) ट्रेन या बस वग़ैरा में सुवार हो कर بِسْمِ اللّٰہ पढ़े, फिर اَللّٰہُ اَکْبَرُ और سُبْحٰنَ اللّٰہ तीन तीन बार, لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ एक बार फिर कहे :

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝ (پ۲۵، الزخرف ۱۳، ۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ पलटना है।

(फ़तावा र-ज़विय्यह तख़रीज़ शुदा, जि. 10, स. 728)

(9) जब कश्ती में सुवार हों तो येह दुआ़ पढ़ें, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ डूबने से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

तरजमा : अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

(फ़तावा र-ज़विय्यह तख़रीज़ शुदा, जि. 10, स. 729)

www.dawateislami.net

(10) दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते रहें। ट्रेन या बस वग़ैरा में بِسْمِ اللّٰه, اَللّٰهُ اَكْبَرُ, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, और سُبْحٰنَ اللّٰه सब तीन तीन बार, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه एक बार।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब कभी सफ़र पर जाएं तो ज़िक्रो दुरूद का विर्द रखें या इस अ़ज़ीम मक़्सद को पेशे नज़र रखते हुए इन्फ़िरादी कोशिश करते रहें कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" अगर हम दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मस्रूफ़ रहेंगे तो फ़िरिश्ता रास्ते भर हि़फ़ाज़त करेगा और अगर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ गाने बाजे सुनते रहे या फ़ुज़ूल ठठ्ठा मस्ख़री करते रहे तो शैत़ान शरीके सफ़र होगा जैसा कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स सफ़र के दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक फ़िरिश्ता मुहा़फ़िज़ मुक़र्रर कर देता है। और जो बेहूदा शे'रो शाइरी और फ़ुज़ूल बातों में मस्रूफ़ रहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पीछे एक शैत़ान लगा देता है।"

(الحصن الحصين، كتاب ادعية السفر، ص٨٣)

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस शख़्स का चेहरा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्नम के धुवें से अमान अ़त़ा फ़रमाएगा और जिस शख़्स के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद

www.dawateislami.net

हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से महफ़ूज़ फ़रमा देगा।" (المعجم الکبیر، رقم ۷۴۸۲، ج۸، ص۹۶)

(11) जब कभी क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र पर जाएं तो मिल जुल कर एक ही जगह उतरें। क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि लोग जब मन्ज़िल पर उतरते तो मुन्तशिर हो कर ठहरते थे। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारा मुन्तशिर हो कर ठहरना शैत़ान की जानिब से है।" इस के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जब कभी किसी मन्ज़िल पर उतरते तो मिल कर ठहरते।

(سنن ابی داود، کتاب الجھاد، باب مایؤمر من انضمام العسکر، الحدیث ۲۶۲۸، ج۳، ص۵۸)

(12) दौराने सफ़र अगर कोई ह़ाजत मन्द मिल जाए तो उस की ह़ाजत रवाई करनी चाहिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस में सवाब ज़ियादा होगा कि बसा अवक़ात मुसाफ़िर ख़ुद भी तो ह़ाजत मन्द हो जाता है फिर भी वोह दूसरों की मदद करेगा तो उस के अज्रो सवाब का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे कि एक आदमी अपनी सुवारी पर आया। और दाएं बाएं उसे फिराने लगा तो म-दनी ताजदार ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के पास फ़ालतू सुवारी है तो वोह उसे दे दे जिस के पास सुवारी नहीं है और जिस के पास फ़ालतू ज़ादे राह हो तो वोह उस को दे दे जिस के पास ज़ादे राह नहीं है।" ह़त्ता कि हम ने येह मह़सूस किया कि हम में से किसी का फ़ालतू माल पर कोई ह़क़ नहीं है।

(سنن ابوداود، کتاب الزکوۃ، باب فی حقوق المال، ج۲، الحدیث ۱۶۶۳، ص۱۷۵)

www.dawateislami.net

(13) जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की त़रफ़ चलें, या हमारी बस वग़ैरा किसी ऐसी सड़क से गुज़रे जो ऊंचाई की त़रफ़ जा रही हो तो "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहना सुन्नत है और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की त़रफ़ चलें तो "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहना सुन्नत है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाया : "जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहते और जब पस्त (ढलान वाली) जगह पर उतरते तो "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहते थे।" (صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب التکبیر اذا علا شرفاً، الحدیث ۲۹۹۴، ج ۲، ص ۳۰۷)

(14) मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ़ से ग़फ़्लत न करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ़ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ़ मक़्बूल है। इसी त़रह़ मज़्लूम की दुआ़ और मां बाप की अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ़ भी क़बूल होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन क़िस्म की दुआ़एं मुस्तजाब (मक़्बूल) हैं। इन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं। (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ (3) बाप की अपने बेटे के लिये दुआ़।"

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما ذکر فی دعوة المسافر، الحدیث ۳۴۵۹، ج ۵، ص ۲۸۰)

(15) मन्ज़िल पर उतरें तो वक़्तन फ़ वक़्तन येह दुआ़ पढ़ें اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर नुक़्सान से बचेंगे**। दुआ़ येह है :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कलिमाते ताम्मह की पनाह मांगता हूं उस के शर से जिसे उस ने पैदा किया।

(کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الحدیث ۱۷۵۰۸، ج ۶، ص ۳۰۱)

www.dawateislami.net

(16) जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो । सूरए ''لِاِيْلٰفِ'' पढ़ लें । اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हर बला से अमान मिलेगी ।

(الحصن الحصین، کتاب ادعیۃ السفر، ص۸۰)

(17) जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीसे पाक में है इस त़रह़ तीन बार पुकारें :

اَعِيْنُوْنِىْ يَا عِبَادَ الله **तरजमा :** ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! मेरी मदद करो । (الحصن الحصین، کتاب ادعیۃ السفر، ص۸۲)

(18) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबा-रका है । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए । (کنز العمال، کتاب السفر، الفصل الثانی فی آداب السفر، الحدیث۱۷۵۰۲، ج۶، ص۳۰۱)

(19) सफ़र से वापसी पर अपनी मस्जिद में दोगाना (या'नी दो रक्अ़त नफ़्ल) **पढ़ना सुन्नत है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ताजदारे मदीना ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां बैठने से पहले दो रक्अ़त (नमाज़ नफ़्ल) अदा फ़रमाते ।

(صحیح البخاری، کتاب الجہاد، باب الصلوٰۃ اذا قدم من سفر، الحدیث۳۰۸۸، ج۲، ص۳۳۶)

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ''72'' निय्यतें

(अज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।” (المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

(1) अस्ल मक़्सूद या'नी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा (2) अपने ज़ाती ख़र्च पर सफ़र करूंगा (3) पल्ले से खाऊंगा (4) सुवारी की दुआ़ पढ़ूंगा (5) अगर किसी इस्लामी भाई को जगह नहीं मिली तो अपनी निशस्त पर बा इसरार बिठाऊंगा (6,7) कोई बूढ़ा या बीमार मुसल्मान नज़र आएगा तो उस के लिये निशस्त ख़ाली कर दूंगा (8) म-दनी क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत करूंगा (9) अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करूंगा (10,11,12) ज़बान, आंख और पेट का कुफ़्ले मदीना लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही से बचूंगा और भूक से कम खाऊंगा (13) सफ़र में हर मौक़अ़ पर म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल जारी रखूंगा (14,15,16) वुज़ू, नमाज़ और कुरआने पाक पढ़ने में जो ग़-लतियां होंगी वोह आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रह कर दुरुस्त करूंगा। (जानने वाला निय्यत करे कि सिखाऊंगा) (17,18) सुन्नतें और दुआ़एं सीखूंगा और (19) दूसरों को सिखाऊंगा और (20) इन पर ज़िन्दगी भर अ़मल करता रहूंगा (21,22,23,24,25) तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा (26) तहज्जुद (27,28) इशराक़ व चाश्त और (29) अव्वाबीन की नमाज़ें पढ़ूंगा (30,31) एक लम्ह़ा भी ज़ाएअ़ नहीं होने दूंगा, अल्लाह अल्लाह करता रहूंगा, दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा। (दौराने दर्सो बयान बिग़ैर कुछ पढ़े ख़ामोशी से सुनना होता है) (32) सदाए मदीना लगाऊंगा

www.dawateislami.net

या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाऊंगा (33,34,35) रास्ते में जब जब मस्जिद नज़र आएगी तो उस की ज़ियारत करूंगा और बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढूंगा, मौक़अ़ मिला तो صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कह कर दूसरों को भी दुरूद शरीफ़ पढ़ाऊंगा (36,37) बाज़ार में जाना पड़ा तो बिल ख़ुसूस नीची निगाहें किये गुज़रते हुए बाज़ार की दुआ़ पढूंगा (38,39,40) मुसल्मानों को सलाम कर के उन से पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात करूंगा (41) ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा (42,43) हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये मुसल्मानों को तय्यार करूंगा। (44) नेकी की दा'वत दूंगा (45) दर्स दूंगा (46) मौक़अ़ मिला तो सुन्नतों भरा बयान करूंगा (47,48) जहां क़ाफ़िला जाएगा वहां के किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर म-दनी क़ाफ़िले के हमराह ह़ाज़िरी दूंगा (49) सुन्नी आ़लिम की ज़ियारत करूंगा (50) अगर म-दनी क़ाफ़िले का कोई मुसाफ़िर बीमार हो गया तो तीमार दारी करूंगा (51) अगर किसी मुसाफ़िर के पास ख़र्च ख़त्म हो गया तो अमीरे क़ाफ़िला के मश्वरे से उस की माली इमदाद करूंगा (52,53,54) सफ़र में अपने लिये, अपने घर वालों के लिये और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआ़ए ख़ैर करूंगा (55,56) जिस मस्जिद में क़ियाम होगा उस मस्जिद और वहां के वुज़ू ख़ाने की सफ़ाई करूंगा (57) अगर किसी ने बिला वज्ह सख़्ती की तब भी सब्र करूंगा (58,59) थकन वग़ैरा के सबब गुस्सा आ गया तो ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए ज़ब्त़ करूंगा (60,61,62) अगर मस्जिद में म-दनी क़ाफ़िले को क़ियाम की

www.dawateislami.net

इजाज़त न मिली तो किसी से उलझ्ने के बजाए उस को अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा और म-दनी क़ाफ़िले के साथ हाथ उठा कर दुआ़ए ख़ैर करता हुवा पलटूंगा (63) अगर कोई झगड़ा करेगा तो ह़क़ पर होने के बा वुजूद उस से झगड़ा न कर के ह़दीसे पाक में दी हुई बिशारते मुस्त़फ़ा का ह़क़दार बनूंगा "जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ा तर्क कर दे उस के लिये जन्नत के दरमियान में मकान बनाया जाएगा।" (جامع الترمذی،کتاب البر والصلہ،باب ماجاء فی المراء،ج ۳ص ۴۰۰) (64,65) अगर किसी ने ज़ुल्मन मारा भी तो जवाबी कारवाई करने के बजाए शुक्र अदा करूंगा कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मार खाने वाली सुन्नते बिलाली अदा हुई। (66,67,68) अगर मेरी वज्ह से किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त अह़्सन त़रीक़े पर मुआ़फ़ी मांगूंगा (69,70,71) चूंकि हर वक़्त साथ रहने में ह़क़ त-लफ़ियों का ज़ियादा इम्कान रहता है लिहाज़ा वापसी पर इन्तिहाई लजाजत के साथ फ़र्दन फ़र्दन मुआ़फ़ी तलाफ़ी करूंगा (72) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए। अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए।"

(کنز العمال،کتاب السفر،الفصل الثانی فی آداب السفر،حدیث ۱۷۵۰۲،ج ۶،ص ۳۰۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक बनने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते रहिये, दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार

www.dawateislami.net

इज्तिमाअ़ जिस मस्जिद में, जिस नमाज़ के बा'द शुरूअ़ होता हो वोह नमाज़ उसी मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ अदा कर के इज्तिमाअ़ में आख़िर तक शिर्कत फ़रमाएं। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम 12 माह और हर 12 माह में यक मुश्त कम अज़ कम 30 दिन नीज़ हर 30 दिन में कम अज़ कम तीन दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में ज़रूर सफ़र करे।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें जब कभी सफ़र दरपेश हो तो पूरा सफ़र सुन्नतों के मुताबिक़ करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और हमें बार बार ह़-रमैने त़य्यिबैन का मुबारक सफ़र नीज़ आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र नसीब फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

क़ाफ़िले में चलो

(कलाम : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
चाहो गर ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो पाओगे अ-ज़-मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो दूर हों आफ़तें क़ाफ़िले में चलो
त़यबा की जुस्त-जू ह़ज की गर आरज़ू है बता दूं तुम्हें क़ाफ़िले में चलो
गर मदीने का ग़म चाहिये चश्मे नम लेने येह ने'मतें क़ाफ़िले में चलो
आंख बे नूर है दिल भी रन्जूर है ख़त्म हों गर्दिशें क़ाफ़िले में चलो
औलियाए किराम इन का फ़ैज़ाने आ़म लूटने सब चलें क़ाफ़िले में चलो
औलिया का करम तुम पे हो ला जरम मिल के सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो
मां जो बीमार हो क़र्ज़ का बार हो रन्जो ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले मरज़े इस्यां टले आओ सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ होगा अदा आ के मांगो दुआ़ पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो
दुख का दरमां मिले आएंगे दिन भले ख़त्म हों गर्दिशें क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें और ख़ुशियां मिलें दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो
हो क़वी ह़ाफ़िज़ा ठीक हो हाज़िमा काम सारे बनें क़ाफ़िले में चलो
इ़ल्म ह़ासिल करो जह्ल ज़ाइल करो पाओगे रिफ़्अ़तें क़ाफ़िले में चलो
तुम क़रज़ दार हो या कि बीमार हो चाहो गर राह़तें क़ाफ़िले में चलो
गर्चे हों गर्मियां या कि हों सर्दियां चाहे हों बारिशें क़ाफ़िले में चलो
कूंदें गर बिज्लियां या चलें आंधियां चाहे ओले पड़ें क़ाफ़िले में चलो

www.dawateislami.net

बारह मह के लिये तीस दिन के लिये
बारह दिन दे ही दें क़ाफ़िले में चलो

सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये
हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो

ऐ मेरे भाइयो ! रट लगाते रहो
क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो

फ़ोन पर बात हो या मुलाक़ात हो
सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो

दोस्त के घर में हों या कि दफ़्तर में हों
सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो

दर्स दें या सुनें या बयां जो करें
उस में भी येह कहें क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल इन से हम म–दनी फूल
आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल आए लेने दुआ़
आओ मिल कर चलें क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल आए हैं मरह़बा
ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

आप जब भी सुने क़ाफ़िला आ गया
ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

खाना ले कर चलें ठन्डा शरबत भी लें
ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

उन पे हों रह़मतें क़ाफ़िले का सुनें
ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

बख़्श दे मेरे मौला तू उन को कि जो
ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

या ख़ुदा हर घड़ी रट हो अ़त्तार की
क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

सुरमा लगाना हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निहायत ही प्यारी प्यारी और मीठी मीठी सुन्नत है। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सोने लगते तो अपनी मुबारक आंखों में सुरमा लगाया करते। लिहाज़ा हमें भी सोने से पहले इत्तिबाए सुन्नत की निय्यत से अपनी आंखों में सुरमा लगाना चाहिये। इस से हमें सुरमा लगाने की सुन्नत का भी सवाब ह़ासिल होगा और साथ ही साथ इस के दुन्यवी फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे।

सोते वक़्त सुरमा डालना सुन्नत है :

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल फ़रमाते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोने से पहले हर आंख में सुरमए इस्मिद की तीन सलाइयां लगाया करते थे।

(جامع الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، الحدیث ۱۷۶۳، ج۳، ص۲۹۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180) लिहाज़ा हम रात को जब भी सोया करें हमें सुरमा लगाना न भूलना चाहिये। सोते वक़्त सुरमा लगाने में येह मस्लह़त है कि सुरमा ज़ियादा देर तक आंखों में रहता है और आंखों के मसामात में सरायत कर के आंखों को फ़ाएदा पहुंचाता है।

www.dawateislami.net

सुरमए इस्मिद बेहतर है :

इब्ने माजह की रिवायत में है "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "इस्मिद" है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، الحدیث ۳۴۹۷، ج۴، ص ۱۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुरमए इस्मिद की फ़ज़ीलत के लिये येही काफ़ी है कि येह सुरमा आमिना बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दुलारे, हम बे कसों के सहारे, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे खुद भी इस्ति'माल फ़रमाया और अपने गुलामों को इस के इस्ति'माल की तरग़ीब भी दिलाई और इस के फ़वाइद भी इर्शाद फ़रमाए। लिहाज़ा हो सके तो सुरमए इस्मिद ही इस्ति'माल करना चाहिये। अहादीसे बाला से येह भी मा'लूम हुवा कि सुरमए इस्मिद बीनाई को तेज़ करने के साथ साथ पलकों के बाल भी उगाता है। कहा जाता है कि इस्मिद इस्फ़हान में पाया जाता है। उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि इस का रंग सियाह होता है और मशरिक़ी ममालिक में पैदा होता है। बहर हाल इस्मिद का सुरमा मुयस्सर आ जाए तो येही अफ़्ज़ल है वरना किसी क़िस्म का भी सुरमा डाला जाए सुन्नत अदा हो जाएगी।

सुरमा लगाने का तरीक़ा

हदीसे बाला में येह भी इर्शाद फ़रमाया गया है कि हमारे प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों मुक़द्दस आंखों में सुरमे की तीन तीन सलाइयां इस्ति'माल फ़रमाते थे और अक्सर इसी पर अमल था। ताहम बा'ज़ रिवायात में सीधी आंख

www.dawateislami.net

मुबारक में तीन सलाइयां और बाईं में दो का भी ज़िक्र आया है और "शमाइले रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" में इसी त़रह़ बयान किया गया है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर आंख मुबारक में दो दो सलाइयां सुरमे की डालते और एक सलाई को दोनों मुबारक आंखों में लगाते।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ علیہ والہ وسلم، الفصل الثانی فی صفۃ بصرہ....الخ، ص ۷۷)

लिहाज़ा हमें मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुख़्तलिफ़ त़रीक़े पर सुरमा इस्ति'माल करना चाहिये। या'नी कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां कभी दाईं आंख में तीन और बाईं में दो, तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के बारी बारी दोनों आंखों में लगाएं। इस त़रह़ करने से तीनों सुन्नतें अदा हो जाएंगी।

येह बात याद रखें कि तक्रीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाएं फिर बाईं आंख में। (المرجع السابق، الفصل الثالث، فی صفۃ شعرہ....الخ، ص ۸۱)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर बार सोते वक़्त सुरमा लगाने की सुन्नत भी अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

अ़जब नहीं कि लिखा लौह़ का नज़र आए !
जो नक़्शे पा का लगाऊं ग़ुबार आंखों में

www.dawateislami.net

छींकने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

छींकना भी एक अहम अम्र है इस की भी सुन्नतें और आदाब हैं। लेकिन अफ़्सोस ! म-दनी माहोल से दूर रहने के बाइ़स मुसल्मानों की अक्सरिय्यत को इस सिल्सिले में कोई मा'लूमात नहीं होतीं, जहां छींक आई ज़ोर ज़ोर से "आक्छी आक्छी" कर लिया। नाक भर आई तो सिनक ली और बस। ऐसा नहीं है, इस की भी सुन्नतें और आदाब हमें सीखने चाहिएं।

(1) छींक के वक़्त सर झुकाएं, मुंह छुपाएं और आवाज़ आहिस्ता निकालें। छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 103) ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित व शद्दाद बिन औस व ह़ज़रते वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी को डकार या छींक आए तो आवाज़ बुलन्द न करे कि शैत़ान को येह बात पसन्द है कि इन में आवाज़ बुलन्द की जाए।"

(شعب الایمان، باب فی تشمیت العاطس، فصل فی تکریر العاطس، الحدیث ۹۳۵۵، ج ۷، ص ۳۲)

(2) जब छींक आए और "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहेंगे तो फ़िरिश्ते "رَبِّ الْعٰلَمِیْن" कहेंगे। अगर आप "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن" कहेंगे तो मा'सूम फ़िरिश्ते येह दुआ़ करेंगे, یَرْحَمُکَ اللّٰہ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए)।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब किसी को छींक आए और वोह "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं

www.dawateislami.net

“رَبِّ الْعٰلَمِيْن” और वोह “اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن” कहता है, तो फ़िरिश्ते कहते हैं “اللّٰه” “يَرْحَمُكَ اللّٰه” या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म फ़रमाए।”

(طبرانی اوسط، الحدیث ۳۳۷۱، ج۲، ص۳۰۵)

(3) छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना सुन्नत है बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहे। सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन يَرْحَمُكَ اللّٰه (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म करे) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले। अगर जवाब में ताख़ीर कर दी तो गुनहगार होगा। सिर्फ़ जवाब देने से गुनाह मुआफ नहीं होगा तौबा भी करना होगी। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 102)

(4) जवाब सुन कर छींकने वाला कहे, “يَغْفِرُاللّٰهُ لَنَاوَلَكُمْ” (अल्लाह तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे, “يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ” (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी इस्लाह़ फ़रमाए)। (الفتاوی الھندیہ، کتاب ما یحل وما لا یحل، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج۵، ص۳۲۶)

(5) छींकने वाला ज़ोर से ह़म्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे, दोनों को सवाब मिलेगा।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب ما یحل وما لا یحل، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج۵، ص۳۲۶)

(6) छींक का जवाब एक मर्तबा वाजिब है। दोबारा छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 102) ह़ज़रते अयास बिन स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक आदमी को छींक आई। मैं भी मौजूद था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : يَرْحَمُكَ اللّٰه, (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह्म फ़रमाए) उसे

www.dawateislami.net

दोबारा छींक आई तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "इसे ज़ुकाम हो गया है।"

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء لم یشمت العاطس، الحدیث ۲۷۵۲، ج ۴، ص ۳۴۱)

(7) जवाब उस सूरत में वाजिब होगा जब छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे और ह़म्द न करे तो जवाब वाजिब नहीं। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 102) ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना, "जब तुम में से किसी शख़्स को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो तुम उस के लिये يَرْحَمُکَ الله कहो। और अगर वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे तो तुम भी يَرْحَمُکَ الله न कहो।"

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب تشمیت العاطس وکراھیۃ التثاؤب، الحدیث ۲۹۹۲، ص ۱۵۹۶)

(8) बुढ़िया की छींक का जवाब मर्द ज़ोर से दे और जवान औ़रत का जवाब दिल में दे। (अलबत्ता इतनी आवाज़ ज़रूरी है कि जवाब देने वाला ख़ुद सुन ले)

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 103)

(9) छींकने वाला दीवार के पीछे हो जब भी जवाब दें। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 103)

(10) कई इस्लामी भाई मौजूद हों और बा'ज़ ह़ाज़िरीन ने जवाब दे दिया तो सब की त़रफ़ से जवाब होगा मगर बेहतर येही है कि सारे जवाब दें। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 103)

(11) नमाज़ के दौरान छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहें। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 103)

(12) आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और किसी को छींक आई

www.dawateislami.net

और आप ने जवाब दे दिया तो आप की नमाज़ फ़ासिद हो गई ।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب ما تحل و ما لاتحل، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج۵،ص ۳۲۶)

(13) काफ़िर को छींक आई और उस ने اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कहा तो जवाब में یَھۡدِیۡکَ اللّٰہُ (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हिदायत करे) कहा जाए ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 103)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें छींक की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नमाज़े अ़स्र की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब मुर्दा क़ब्र में दाख़िल होता है, तो उसे सूरज डूबता हुवा मा'लूम होता है, वोह आंखें मलता हुवा उठ बैठता है और कहता है دَعُوْنِیْ اُصَلِّیْ ज़रा ठहरो ! मुझे **नमाज़** तो पढ़ने दो"

("سنن ابن ماجه"، کتاب الزهد، باب ذکر القبر و البلی، الحدیث: ۴۲۷۲، ص۲۷۳۶)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के इस हिस्से دَعُوْنِیْ اُصَلِّیْ (ज़रा ठहरो ! मुझे नमाज़ तो पढ़ने दो ।) के बारे में फ़रमाते हैं **: या'नी** ऐ फ़िरिश्तो ! सुवालात बा'द में करना, **अ़स्र** का वक़्त जा रहा है मुझे नमाज़ पढ़ लेने दो । येह वोह कहेगा जो दुन्या में नमाज़े अ़स्र का पाबन्द था **अल्लाह** नसीब करे । मज़ीद फ़रमाते हैं **:** मुम्किन है कि इस अ़र्ज़ पर सुवाल व जवाब ही न हों और हों तो निहायत आसान, क्यूं कि इस की येह गुफ़्त-गू तमाम सुवालों का जवाब हो चुकी ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 143)

www.dawateislami.net

नाख़ुन, ह़जामत, मूए बग़ल वग़ैरा से मु-तअ़ल्लिक़ सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे सरकार, म-दनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ाई को बेह़द पसन्द फ़रमाते हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اَلطُّهُوْرُ نِصْفُ الْاِيْمَانِ या'नी सफ़ाई आधा ईमान है।" (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ۹۲، الحدیث ۳۵۳۰، ج ۵، ص ۳۰۸)

चुनान्चे हर मुसल्मान को चाहिये कि अपने ज़ाहिरो बात़िन दोनों की सफ़ाई का ख़याल रखे। ज़ाहिर की सफ़ाई का जहां तक तअ़ल्लुक़ है तो वोह येह है कि अपना जिस्म और लिबास वग़ैरा नजासत से पाक रखने के साथ साथ मैल कुचैल वग़ैरा से भी साफ़ रखना चाहिये। नीज़ अपने सर और दाढ़ी के बालों को भी दुरुस्त रखें। नाख़ुन भी ज़ियादा न बढ़ने दें कि इन में मैल कुचैल भर जाता है और वोह खाना वग़ैरा खाने में पेट के अन्दर पहुंचता है जिस के सबब त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा रहता है। नीज़ बग़ल व ज़ेरे नाफ़ के बाल भी साफ़ करते रहना चाहिये। रहा बात़िन की सफ़ाई का मुआ़-मला तो अपने बात़िन को भी कीनए मुस्लिम, ग़ुरूर व तकब्बुर, बुग़्ज़ व ह़सद, वग़ैरा वग़ैरा रज़ाइल से पाक व साफ़ रखना ज़रूरी है। बात़िन की सफ़ाई के लिये अच्छी सोह़बत बेह़द ज़रूरी है। ज़ाहिरी सफ़ाई या'नी नाख़ुन, मूए बग़ल वग़ैरा की सफ़ाई के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा हों।

www.dawateislami.net

चालीस दिन के अन्दर अन्दर इन कामों को ज़रूर कर लें, मूंछें और नाख़ुन तराशना, बग़ल के बाल उखाड़ना और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडना । ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मूंछें और नाख़ुन तरश्वाने और बग़ल के बाल उखाड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडने में हमारे लिये येह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस दिन से ज़ियादा न छोड़ें ।

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فی خصال الفطرۃ، الحدیث ۲۵۸، ص ۱۵۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे बाला से पता चला कि चालीस दिन के अन्दर अन्दर येह काम ज़रूर कर लेना चाहिये । हफ़्ते में एक बार नहाना और बदन को साफ़ सुथरा रखना और मूए ज़ेरे नाफ़ दूर करना मुस्तह़ब है । पन्दरहवें रोज़ करना भी जाइज़ है और चालीस रोज़ से ज़ियादा गुज़ार देना मकरूह व मम्नूअ़ है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 196) प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो हर जुमुआ़ को येह काम कर ही लेने चाहिएं क्यूं कि एक ह़दीसे मुबारक में है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन नमाज़ के लिये जाने से पहले मूंछें कतरवाते और नाख़ुन तरश्वाते । (شعب الایمان، باب فی الطھارات، فصل الوضوء، الحدیث ۲۷۶۳، ج ۳، ص ۲۴)

हाथों के नाख़ुन तराशने का त़रीक़ा :

हाथों के नाख़ुन तराशने के दो त़रीक़े यहां बयान किये जाते हैं इन दोनों में से आप जिस त़रीक़े पर भी अ़मल करेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नत का सवाब पाएंगे । येह भी हो सकता है कभी एक पर

www.dawateislami.net

अ़मल कर लें कभी दूसरे पर। इस त़रह़ दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा। चुनान्चे ज़ैल में दोनों त़रीक़े पेश किये जाते हैं :

(1) मौलाए काएनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से नाख़ुन काटने की येह सुन्नत मन्क़ूल है कि सब से पहले सीधे हाथ की छुंग्लिया, फिर बीच वाली, फिर अंगूठा, फिर मंझली (या'नी छुंग्लिया के बराबर वाली) फिर शहादत की उंगली। अब बाएं हाथ में पहले अंगूठा, फिर बीच वाली, फिर छुंग्लिया, फिर शहादत की उंगली, फिर मंझली। या'नी सीधे हाथ के नाख़ुन छुंग्लिया से काटना शुरूअ़ करें और उल्टे हाथ के नाख़ुन अंगूठे से। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 195)

(2) दूसरा त़रीक़ा आसान है और येह भी हमारे म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है और वोह येह है कि सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंग्लिया समेत नाख़ुन तराशें मगर अंगूठा छोड़ दें। अब उल्टे हाथ की छुंग्लिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन तराश लें। अब आख़िर में सीधे हाथ का अंगूठा जो बाक़ी था उस का नाख़ुन भी काट लें। इस त़रह़ सीधे ही हाथ से शुरूअ़ हुवा और सीधे ही हाथ पर ख़त्म। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 196)

पाउं के नाख़ुन काटने का त़रीक़ा :

बहारे शरीअ़त में "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से लिखा है कि पाउं के नाख़ुन तराशने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं। बेहतर येह है कि वुज़ू में पाउं की उंगलियों में ख़िलाल करने की जो तरतीब है उसी

www.dawateislami.net

तरतीब के मुताबिक़ पाउं के नाखुन काट लें। या'नी सीधे पाउं की छुंग्लिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन तराश लें फिर उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया समेत नाखुन काट लें। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 196)

(3) **दांत से नाखुन नहीं काटना चाहिये कि मक्रूह है** और इस से म-रज़े बर्स पैदा हो जाने का अन्देशा है। مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ

(ردالمحتار مع درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۶۸)

(4) **लम्बे नाखुन शैतान की निशस्त गाह हैं।** या'नी इन पर शैतान बैठता है। (کیمیائے سعادت، اصل دوم درطہارت، ج۱، ص۱۶۸)

(5) **नाखुन या बाल वग़ैरा काटने के बा'द दफ़्न कर देना चाहिएं।** बैतुल ख़ला या गुस्ल ख़ाने में डाल देना मक्रूह है कि इस से बीमारी पैदा होती है। (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۶۸)

(6) **नाखुन तराश लेने के बा'द उंग्लियों के पोरे धो लेने चाहिएं।**

(7) **बग़ल के बालों को उखाड़ना सुन्नत है** और मूंडना गुनाह भी नहीं। (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۷۱)

(8) **नाक के बाल न उखाड़ें** कि इस से म-रज़े आकिला पैदा हो जाने का ख़ौफ़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان والخصاء...الخ، ج۵، ص۳۵۸)

(9) **गरदन के बाल मूंडना मक्रूह है।** (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۷۰) या'नी जब कि सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं। हां अगर पूरे सर के बाल

www.dawateislami.net

मुंडाएं तो इस के साथ गरदन के भी मुंडा दें । नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़जामत के सिवा गरदन के बाल मुंडाने से मन्अ़ फ़रमाया । (المعجم الاوسط، الحدیث ۲۹۲۹، ج ۲، ص ۱۸۷)

(10) **अब्रू के बाल अगर बड़े हो जाएं तो उन को तरश्वा सकते हैं ।** (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج ۹، ص ۶۷۰)

(11) **दाढ़ी का ख़त़ बनवाना जाइज़ है ।** (ردالمحتار، ج ۹، ص ۶۷۱)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 296 पर लिखते हैं : "दाढ़ी क़लमों के नीचे से कन्पटियों, जबड़ों, ठोड़ी पर जमती है और अ़र्ज़न इस का बालाई ह़िस्सा कानों और गालों के बीच में होता है । जिस त़रह़ बा'ज़ लोगों के कानों पर रोंगटे होते हैं वोह दाढ़ी से ख़ारिज़ हैं, यूं ही गालों पर जो ख़फ़ीफ़ बाल किसी के कम किसी के आंखों तक निकलते हैं वोह भी दाढ़ी में दाख़िल नहीं । येह बाल क़ुदरती त़ौर पर मूए रीश से जुदा व मुमताज़ होते हैं । इस का मुसल्सल रास्ता जो क़लमों के नीचे से एक मख़रूत़ी शक्ल पर जानिबे ज़क़न जाता है येह बाल इस राह से जुदा होते हैं, न इन में मूए मह़ासिन के मिस्ल क़ुव्वते नामिया, इन के साफ़ करने में कोई ह़रज नहीं बल्कि बसा अवक़ात इन की परवरिश बाइसे तश्वियए ख़ल्क़ व तक़्बीहे़ सूरत होती है जो शरअ़न हरगिज़ पसन्दीदा नहीं ।"

(12) **हाथ, पाउं और पेट के बाल दूर करना चाहें तो मन्अ़ नहीं ।** (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 197)

www.dawateislami.net

(13) **सीना और पीठ के बाल काटना या मूंडना अच्छा नहीं ।** (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 197)

(14) **दाढ़ी बढ़ाना सु-नने अम्बिया व मुर-सलीन** عَلَيۡهِمُ السَّلام **से है ।** (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 197) मुंडाना या एक मुश्त से कम करना ह़राम है । "हां एक मुश्त से ज़ाइद हो जाए तो जितनी ज़ियादा है उस को कटवा सकते हैं ।"

(درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹ص ۶۷۱)

(15) **मूंछों के दोनों कनारों के बाल बड़े बड़े हों तो ह़रज नहीं ।** बा'ज़ अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ الله (या'नी गुज़श्ता बुजु़र्गों) की मूंछें इस क़िस्म की थीं ।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب التاسع عشر فی الختان والخصاء...الخ، ج۵ص ۳۵۸)

(16) **मर्द को चाहिये कि मूए ज़ेरे नाफ़ उस्तरे वग़ैरा से मूंड दे ।** (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 196)

(17) **इस काम के लिये बाल सफ़ा पावडर वग़ैरा का इस्ति'माल मर्द व औ़रत दोनों को जाइज़ है ।**

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 197)

(18) **मूए ज़ेरे नाफ़ को नाफ़ के ऐ़न नीचे से मूंडना शुरूअ़ करें ।** (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 197)

(19) **जनाबत की ह़ालत में** (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में) **न कहीं के बाल मूंडें न ही नाख़ुन तराशें** कि ऐसा करना मकरूह है । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 197)

www.dawateislami.net

(20) **इस्लामी बहनें अपने सर वग़ैरा के बाल ऐसी जगह न डालें जहां ग़ैर मह़रम की नज़र पड़े।**

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 81)

(21) **इन्सान के बाल** (ख़्वाह वोह जिस्म के किसी भी हि़स्से के हों) **नाख़ुन, हैज़ का लत्ता** (या'नी वोह कपड़ा जिस से हैज़ का ख़ून साफ़ किया गया हो) **और इन्सानी ख़ून इन चारों चीज़ों को दफ़्न कर देने का हुक्म है।**

(درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ج۹، ص۲۶۸)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने ज़ाहिर व बाति़न दोनों को साफ़ रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और इस मुआ़-मले में जो जो सुन्नतें हैं उन तमाम सुन्नतों पर खुशदिली से अ़मल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दो दर्द सुन्नतों का पए शाहे करबला
उम्मत के दिल से लज़्ज़ते इस्यां निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 305)

www.dawateislami.net

ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे म-दनी आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमेशा अपने सरे मुबारक के बाल शरीफ़ पूरे रखे । कभी निस्फ़ कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गेसू शरीफ़ बढ़ जाते तो मुबारक शानों को झूम झूम कर चूमने लगते ।

गोश तक सुनते थे फ़रियाद अब आए ता दोश
कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

(1) **चाहें तो आधे कानों तक गेसू रखिये कि** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मदीने वाले आक़ा, शबे अस्रा के दूल्हा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक आधे मुबारक कानों तक थे । (جامع الترمذی، الشمائل باب ما جاء فی شعر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم الحدیث ۲۴ ص ۵۰۷)

देखो क़ुरआं में शबे क़द्र है ता मत़्लए फ़ज्र
या'नी नज़्दीक हैं आ़रिज़ के वोह प्यारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 89)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

चूंकि बाल बढ़ने वाली चीज़ है । इस लिये जिस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जैसा देखा वोही रिवायत कर दिया । चुनान्चे ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निस्फ़ कानों तक देखा तो इसी को रिवायत किया और जिस ने इस से ज़ियादा बड़े देखे उस ने उसी मिक़्दार को रिवायत किया।

(2) **चाहें तो पूरे कानों तक गेसू रखिये कि** ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सुल्ताने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दे मुबारक दरमियाना था, दोनों मुबारक शानों के दरमियान फ़ासिला था और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसू मुबारक मुक़द्दस कानों को चूमते थे। (شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث ۳، ص ۱۷)

(3) **चाहें तो शानों तक गेसू बढ़ाइये कि** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर जो बाल मुबारक होते वोह कान मुबारक की लौ से ज़रा नीचे होते और मुबारक शानों को चूमते। (شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث ۲۵، ص ۳۵)

(4) **सर के बीच में से मांग निकालिये कि सुन्नत है।** जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **बहारे शरीअ़त** में लिखते हैं ''बा'ज़ लोग दाह्ने या बाईं जानिब मांग निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। सुन्नत येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए। और बा'ज़ लोग मांग नहीं निकालते बल्कि बालों को सीधे रखते हैं येह भी सुन्नते मन्सूख़ा और यहूदो नसारा का त़रीक़ा है।''

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 199)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इन अह़ादीसे मुबा-रका से हमें बख़ूबी मा'लूम हो गया कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा अपने सरे अक़्दस पर पूरे ही बाल रखे। आजकल जो छोटे छोटे बाल रखे जाते हैं, इस त़रह़ के बाल रखना सुन्नत नहीं है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! त़रह़ त़रह़ की तराश ख़राश वाले बाल रखने की बजाए हमें चाहिये कि प्यारे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में अपने सर पर आधे कानों तक, कानों की लौ तक या इतनी बड़ी ज़ुल्फ़ें रखें कि शानों को छू लें। इस का आसान त़रीक़ा येह है कि एक धागा ले कर आधे कान से या एक कान की लौ से सर के पिछले ह़िस्से की त़रफ़ से दूसरे कान के निस्फ़ तक या दूसरे कान की लौ तक ले जाएं और उसे मज़्बूत़ी से पकड़ लें, अब उस धागे से नीचे जितने बाल आएं वोह कटवा दीजिये।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम सब मुसल्मानों को ख़िलाफ़े सुन्नत बाल रखने और रखवाने की सोच से नजात दे कर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी, मीठी मीठी सुन्नत ज़ुल्फ़ें रखने वाली "म-दनी सोच" अ़त़ा फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक में तेल डालते, कंघा करते, बीच सर में मांग निकालते। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के बाल हों तो वोह उन का इक्राम करे।" (या'नी उन को धोए, तेल लगाए, कंघा करे)

(سنن ابوداود، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، الحدیث ۴۱۶۳، ج ۴، ص ۱۰۳)

चुनान्चे अब तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतों और आदाब का बयान किया जाता है।

(1) **मांग सर के बीच में निकाली जाए कि सुन्नत है।**

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 198)

(2) **सर में तेल डालने से क़ब्ल "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ लेना चाहिये।**

(3) **सर में तेल लगाने का त़रीक़ा येह है कि** "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ कर उल्टे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालें, फिर पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाएं फिर उल्टी के। इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर, फिर उल्टी पर। अब (फिर "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" पढ़ कर) सर में तेल डालें।

(ملخصاً شمائل رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، للامام النبہانی، الفصل الثالث فی متعلق شعرہ....الخ، ص ۸۱)

www.dawateislami.net

(4) **जब भी तेल लगाएं तो इमामे के नीचे सरबन्द बांधिये।** हमारे सरकार, मदीने के ताजदार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिज़ाजे मुबारक में चूंकि बेहद नफ़ासत थी इसी लिये तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सरे मुबारक में तेल लगाते तो अपने इमामा मुबारक और उस की टोपी शरीफ़ और दीगर लिबास को तेल के असर से बचाने के लिये सरे अक़्दस पर एक कपड़ा लपेट लिया करते। और चूंकि तेल मुबारक का इस्ति'माल बहुत ज़ियादा होता इस लिये वोह मुबारक कपड़ा तेल शरीफ़ वाला हो जाता। (شمائل المحمدیۃ، الحدیث ۳۲، ص ۴۰)

गुज़श्ता ह़दीसे मुबारक से येह भी मा'लूम हुवा कि तेल डालने के बा'द टोपी और इमामे के नीचे कोई कपड़ा या रुमाल रखना या बांधना सुन्नत है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सरबन्द बांधने की सुन्नत से मु-तअ़ल्लिक़ "शमाइले तिरमिज़ी" में एक बाब बांधा है।

(5) **सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले** ख़ुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इ़त्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये। ख़ुश्बूदार तेल तय्यार है। सर के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से धोते रहिये।

www.dawateislami.net

(6) दाढ़ी में अक्सर ग़िज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बा'ज़ अवक़ात मुंह की बदबूदार राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह़ बदबू आती है लिहाज़ा मश्व-रतन अ़र्ज़ है कि हो सके तो **रोज़ाना एकआध बार साबुन से दाढ़ी धो ली जाए।**

(7) बा'ज़ इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ का इमामा शरीफ़ बांधने का जज़्बा तो रखते हैं मगर सफ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं बसा अवक़ात ला शुऊ़री में मस्जिद के अन्दर "बदबू" फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं। लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि **इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर इस्ति'माल करने वाले इस्लामी भाई ह़त्तल इम्कान हर हफ़्ते और मौसिम के ए'तिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने की तरकीब बनाएं।** वरना मैल कुचैल, पसीना और तेल वग़ैरा के सबब इन चीज़ों में बदबू हो जाती है, अगर्चे ख़ुद को मह़सूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन आती है, ख़ुद को इस लिये पता नहीं चलता कि जिस के पास मुस्तक़िलन कोई मख़्सूस ख़ुश्बू या बदबू हो इस से उस की नाक अट जाती है।

(8) **जिन इस्लामी भाइयों के सर पर बाल हों उन को चाहिये कि इन में कंघा किया करें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मैं ने अ़र्ज़ की, कि मेरे सर पर पूरे बाल हैं, मैं इन को कंघा किया करूं ? तो आक़ाए मदीना, फ़ैज़

www.dawateislami.net

गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां और इन का इक्राम करो।" लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मीठे म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने की वज्ह से कभी कभी तो दिन में दो दो मर्तबा भी तेल लगाया करते।

(موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، الحدیث، ۱۸۱۸، ج۲، ص ۴۳۵)

(9) **बाल बिखरे हुए न रखें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे दो आ़लम, शाहे बनी आदम, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। इतने में एक शख़्स आया जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे। हमारे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ इस अन्दाज़ पर इशारा किया जिस से साफ़ ज़ाहिर होता था कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस को बाल दुरुस्त करने का हुक्म फ़रमा रहे हैं। वोह शख़्स बाल दुरुस्त कर के वापस आया, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या येह इस से बेहतर नहीं है कि कोई शख़्स बालों को इस त़रह़ बिखेर कर आता है गोया वोह शैत़ान है।"

(موطا امام مالک، کتاب الشعر، باب اصلاح الشعر، الحدیث، ۱۸۱۹، ج۲، ص ۴۳۵)

मीठे इस्लामी भाइयो ! मुन्दरिजए बाला अह़ादीसे मुबा-रका में सर और दाढ़ी के बालों को बिखरा हुवा और बे तरतीब छोड़ना ना पसन्दीदा बताया गया है और फ़रमाया गया है कि बालों का इक्राम किया करो या'नी इन को तेल और कंघी के

www.dawateislami.net

ज़रीए दुरुस्त रखा करो। बल्कि बयान की गई आख़िरी ह़दीसे पाक में तो बिखरे हुए बाल रखने वाले को शैतान से तश्बीह दी गई है।

लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने लिबास को पाको साफ़ रखने के साथ साथ अपने दाढ़ी और सर के बालों को भी दुरुस्त रखा करें। बहर ह़ाल हमारा हुल्या सुन्नतों के सांचे में ढल कर ऐसा सुथरा और निखरा हुवा होना चाहिये कि लोग हमें देख कर हम से घिन न करें बल्कि हमारी त़रफ़ माइल हों।

मेरी हर हर अदा से या नबी सुन्नत झलक्ती हो
जिधर जाऊं शहा ख़ुश्बू वहां तेरी महक्ती हो

(10) **कंघा करते वक़्त सीधी त़रफ़ से इब्तिदा कीजिये** कि हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा, शबे अस्रा के दूल्हा, शाफ़ेए रोज़े जज़ा, सुल्त़ाने अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर तकरीम वाला काम सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ फ़रमाते। जैसा कि "तिरमिज़ी शरीफ़" में है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दाईं जानिब से वुज़ू करना पसन्द फ़रमाते और इसी त़रह़ कंघा भी सीधी त़रफ़ से ही करते, नीज़ ना'लैने शरीफ़ैन भी जब पहनने का इरादा फ़रमाते तो पहले सीधा क़-दमे मोह़तरम ना'ले शरीफ़ में दाख़िल फ़रमाते।

(جامع الترمذی، الشمائل باب ماجاء فی ترجل رسول اللہ، الحدیث ۳۴، ج۵، ص۵۰۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी त़रफ़ से वुज़ू करना पसन्द फ़रमाते। इस

www.dawateislami.net

के मा'ना येह हैं कि वुज़ू करते वक़्त पहले सीधा हाथ मुबारक धोते फिर बायां। इसी त़रह़ पाउं मुबारक धोते वक़्त भी येही तरतीब मल्ह़ूज़ रखा करते। नीज़ इस ह़दीसे पाक में कंघा और ना'लैने शरीफ़ैन के बारे में भी सीधी ही जानिब से शुरूअ़ करना मन्क़ूल हुवा। या'नी सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक में जब कंघा फ़रमाते तो पहले सीधी जानिब से शुरूअ़ करते, फिर बाईं जानिब। नीज़ ना'लैने शरीफ़ैन पहनते वक़्त भी पहले सीधे क़-दमे मुबारक को ना'ले पाक में दाख़िल फ़रमाते फिर बाएं क़-दमे मुकर्रम को। सिर्फ़ इन तीन कामों ही की तख़्सीस नहीं, जितने भी तक्रीम के काम हैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से ही शुरूअ़ करना पसन्द फ़रमाते। चुनान्चे लिबास पहनना, मस्जिद में दाख़िल होना, सर और मूंछ वग़ैरा के बाल तराशना, मिस्वाक करना, नाख़ुन काटना, आंखों में सुरमा डालना, किसी को कोई चीज़ देना या किसी से लेना, खाना पीना वग़ैरा वग़ैरा काम सीधे हाथ से सीधी जानिब से करने चाहिएं।

(11) **सरकारे मदीना,** राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रीशे मुबारक में कंघा करते वक़्त आईने में अपना रूए अन्वर मुला-ह़ज़ा फ़रमाते और जब आईने में अपना चेह्‌रए मुबारक देखते तो इस त़रह़ दुआ़ करते : ''اَللّٰهُمَّ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तूने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند سیدۃ عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا، الحدیث ۲۴۴۴۶، ج۹، ص۳۳۹)

www.dawateislami.net

यक़ीनन येह दुआ़ अपने गुलामों की ता'लीम के लिये है कि वोह अपने अख़्लाक़ की इस्लाह़ के लिये दुआ़ करते रहा करें, वरना हमारे सरकारे आ़लम मदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के तो क्या कहने। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ के तो क़ुरआने मजीद में चरचे हैं। चुनान्चे पारह 29, **सू-रतुल क़लम**, आयत नम्बर 4 में इर्शाद होता है :

وَاِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ۝
(پ۲۹، القلم۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू (ख़ुल्क़) बड़ी शान की है।

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा   तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा !   तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 62)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ अपने सर और दाढ़ी में तेल लगाने और कंघा करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़ते मुबा-रका में बेह़द नफ़ासत थी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़ाई और पाकीज़गी को बेह़द पसन्द फ़रमाते थे। इसी ज़िम्न में गुज़श्ता सफ़ह़ात में नाखुन व मूंछें तराशने, सर और दाढ़ी शरीफ़ में तेल लगाने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब पेश किये गए। अब इसी ज़िम्न में "**ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब**" बयान किये जाते हैं ताकि हमारे इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मा'लूम हो कि कौन सी ज़ीनत ब मुत़ाबिक़े सुन्नत है और कौन सी ज़ीनत सुन्नत का दाएरा तोड़ कर फ़िरंगी फ़ेशन के अंधेरे गढ़े में जा पड़ती और दुन्या और आख़िरत की तबाही का सबब बनती है।

(1) **इन्सान के बालों की चोटी बना कर औ़रत अपने बालों में गूंधे, येह ह़राम है।** ह़दीसे मुबारक में इस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत आई जिस ने किसी दूसरी औ़रत के सर में इन्सानी बालों की चोटी गूंधी।

(درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب فی النظر والمس، ج۹،ص۶۱۴ تا ۶۱۵)

(2) **अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई ख़ुद इस औ़रत के अपने बाल हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ है।** (درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج۹،ص۶۱۴ تا ۶۱۵)

www.dawateislami.net

(3) **ऊन या सियाह धागे की चोटी इस्लामी बहनों को सर में लगाना जाइज़ है।**

(درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب فی النظر والمس، ج۹،ص۶۱۴ تا ۶۱۵)

(4) **लड़कियों के कान नाक छेदना जाइज़ है।**

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج۹،ص۵۹۸)

(5) **बा'ज़ लोग लड़कों के भी कान छिदवाते हैं और बाली वग़ैरा पहनाते हैं येह ना जाइज़ है।** या'नी कान छिदवाना भी ना जाइज़ और उसे ज़ेवर पहनाना भी ना जाइज़।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج۹،ص۵۹۸ ملخصاً)

(6) **औ़रतों को हाथ पाउं में मेंहदी लगाना जाइज़ है।** छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेंहदी लगाना ना जाइज़ है, बच्चियों को मेंहदी लगाने में ह़रज नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی اللبس، ج۹،ص۵۹۹ ملتقطاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मदीने के ताजदार, सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़ा) ह़ाज़िर किया गया जिस ने अपने हाथ और पाउं मेंहदी से रंगे हुए थे। इर्शाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है ? (या'नी इस ने क्यूं मेंहदी लगाई है ?) लोगों ने अ़र्ज़ की, येह औ़रतों की नक़्ल करता है। हमारे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि "इसे शह्र बदर कर दो।" लिहाज़ा उस को शह्र बदर कर दिया गया, मदीनए मुनव्वरह से निकाल कर "नक़ीअ़" को भेज दिया गया।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الحکم فی المخنثین، الحدیث ۴۹۲۸، ج۴،ص۳۶۸)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? मुख़न्नस ने औ़रतों की नक़्ल की या'नी हाथ पाउं में मेंहदी लगाई तो हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से किस क़दर नाराज़ हुए कि उसे शह्‌र बदर कर दिया। इस मुबारक ह़दीस से हमारे वोह भाई दर्स ह़ासिल करें जो शादी या ईदैन वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर अपने हाथों या उंग्लियों पर मेंहदी लगा लिया करते हैं। और हां ! जिस त़रह़ मर्दों को औ़रतों की नक़्ल जाइज़ नहीं इसी त़रह़ औ़रतें भी मर्दों की नक़्ल नहीं कर सकतीं। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औ़रतों की सूरत बनाएं और मर्दानी औ़रतों पर जो मर्दों की सूरत बनाएं।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عباس، الحدیث ۲۲۶۳، ج ۱ ص ۵۴۰)

(7) **जानदार की तसावीर वाले लिबास हरगिज़ न पहना करें** न ही जानवरों या इन्सानों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़ अपने कपड़ों पर लगाएं, न ही घरों में आवेज़ां करें।

(8) **अपने बच्चों को ऐसे "बाबा सूट" न पहनाएं जिन पर जानवरों और इन्सानों के फ़ोटो बने हुए होते हैं।**

(9) **ख़वातीन अपने शोहर के लिये जाइज़ अश्या के ज़रीए़, मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें** लेकिन मेकअप कर के और बन संवर के घर से बाहर न निकला करें कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत पूरी की पूरी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है जब कोई औ़रत बाहर निकलती है तो शैत़ान

www.dawateislami.net

उस को झांक झांक कर देखता है।"

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب(۱۸)،الحدیث۱۱۷۶،ج۲،ص۳۹۲)

(10) **नंगे सर फिरना सुन्नत नहीं है।** लिहाज़ा इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अपने सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाए रखें कि येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निहायत ही मीठी सुन्नत है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 16, स. 55)

मीठे इस्लामी भाइयो और बहनो ! बस ज़ीनत वोही कीजिये जिस की शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई और हरगिज़ हरगिज़ फ़िरंगी फ़ेशन न अपनाइये जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ह्रो ग़ज़ब जोश पर आए।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें फ़िरंगी फ़ेशन की आफ़त से छुड़ा कर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का दीवाना बना दे। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) ....."अल्लाह तआ़ला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है, उस को दीन की समझ अ़त़ा फ़रमाता है।" ("صحيح البخاري"، الحديث: ٧١، ص٨)

(2)....."जो शख़्स त़-लबे इ़ल्म में रहता है, अल्लाह तआ़ला उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है।" ("تاريخ بغداد"، رقم: ١٥٣٥، ج٣، ص٣٩٧)

(3)....."आ़लिम का गुनाह एक गुनाह है और जाहिल के लिये दो गुनाह, आ़लिम पर वबाल सिर्फ़ गुनाह करने का और जाहिल पर एक अ़ज़ाब गुनाह का और दूसरा (इ़ल्मे दीन) न सीखने का।"

("الفردوس بمأثور الخطاب"، الحديث: ٣١٦٥، ج٢، ص٢٤٨،
و"الجامع الصغير" للسيوطي، الحديث ٤٣٣٥، ص ٢٦٤)

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे मीठे मीठे सरकार, मदीने के ताजदार, दो आलम के मुख़्तार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुश्बू बेहद पसन्द है । लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर वक़्त मुअ़त्तर मुअ़त्तर रहते । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का बहुत इस्ति'माल फ़रमाया करते थे ताकि गुलाम भी अदाए सुन्नत की निय्यत से ख़ुश्बू लगाया करें वरना इस बात में किस को शक व शुबा हो सकता है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मस्ऊद तो कुदरती तौर पर खुद ही महक्ता रहता और ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक पसीना बज़ाते खुद काएनात की सब से बेहतरीन ख़ुश्बू है ।

मुश्को अम्बर क्या करूं ऐ दोस्त ख़ुश्बू के लिये
मुझ को सुल्ताने मदीना का पसीना चाहिये

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक बार मीठे मीठे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते पुर अन्वार मेरे चेहरे पर फेरा मैं ने उसे ठन्डा और ऐसी ख़ुश्बूदार हवा की तरह पाया जो किसी इत्र फ़रोश के इत्रदान से निकलती है । (وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم، الفصل الرابع فی صفۃ عرقہ ....الخ، ص ۸۵)

उम्दा क़िस्म की ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "शमाइले रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" में है कि हमारे मदीने वाले आक़ा, महक्ने

www.dawateislami.net

और महकाने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उ़म्दा और बेहतरीन क़िस्म की ख़ुश्बू बहुत पसन्द थी और नाख़ुश गवार बू या'नी बदबू आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ना पसन्द फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमेशा उ़म्दा ख़ुश्बू इस्ति'माल करते और इसी की दूसरे लोगों को भी तल्क़ीन फ़रमाते। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "हमारे मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक ख़ास क़िस्म की ख़ुश्बू थी जिसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस्ति'माल फ़रमाते।"

(المرجع السابق، الفصل الخامس فی صفۃ طیبہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، ص ۸۷)

सर में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم "मुश्क" सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते। (المرجع السابق)

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : मैं अपने सरताज, माहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को निहायत उ़म्दा से उ़म्दा ख़ुश्बू लगाती थी यहां तक कि उस की चमक हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक और दाढ़ी शरीफ़ में पाती।

(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب الطیب فی الرأس واللحیۃ، الحدیث ۵۹۲۳، ج ۴، ص ۸۱)

एयर फ़्रेश्नर :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सर और

www.dawateislami.net

दाढ़ी के बालों में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है। मगर येह ख़याल रखें कि सर और दाढ़ी में सिर्फ़ देसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करें। बद क़िस्मती से आजकल देसी ख़ुश्बू-जात का मिलना बेहद दुश्वार हो गया है। अब उ़मूमन इ़त्रियात केमीकल्ज़ से बनाए जाते हैं। इन का लिबास में इस्ति'माल करना जाइज़ तो है मगर सर और दाढ़ी में लगाना नुक़्सान देह है आजकल "एयर फ्रेश्नर" का इस्ति'माल आ़म होता जा रहा है इन का छिड़काव ख़ास तौ़र पर उन कमरों में किया जाता है जो बन्द रहते हैं इस से वक़्ती तौ़र पर कमरे में ख़ुश्बू तो हो जाती है मगर इस के कीमियावी माद्दे फ़ज़ा में फैल जाते हैं जो सांस के साथ फेफडों में दाख़िल हो कर सिह़्ह़त को नुक़्सान पहुंचाते हैं। एक ति़ब्बी तह़क़ीक़ के मुता़बिक़ "एयर फ्रेश्नर" के इस्ति'माल से चमड़ी का केन्सर हो जाता है। चन्द लम्ह़ों की ख़ुश्बू के ह़ुसूल की ख़ाति़र इतना बड़ा ख़त़रा मोल लेना अ़क़्ल मन्दी नहीं। लिहाज़ा "एयर फ्रेश्नर" के इस्ति'माल से इज्तिनाब करना चाहिये।

ख़ुश्बू का तोह़फ़ा :

"शमाइले तिरमिज़ी" में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद नहीं फ़रमाते थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबियों के सरदार, हमारे मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में जब ख़ुश्बू तोह़फ़तन पेश की जाती तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रद न फ़रमाते। (جامع الترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی تعطر رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم، الحدیث ۲۱۶، ج۵، ص۵۴۰)

"शमाइले तिरमिज़ी" में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है कि तीन चीज़ें वापस नहीं लौटानी चाहिएं (1) तकिया (2) ख़ुश्बू व तेल और (3) दूध। (المرجع السابق، الحدیث ۲۱۷)

मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश्बू, तकिया और दूध (और इन में तमाम कम क़ीमत की चीज़ें शामिल हैं) का हदिय्या क़बूल करने की हिक्मत मुहद्दिसीने किराम رَحِمَہُمُ اللہُ येह बयान करते हैं कि उ़मूमन येह चीज़ें इतनी क़ीमती नहीं होतीं और ज़ाहिर है जो सस्ती चीज़ होती है वोह देने वाले के लिये ज़ियादा बोझ साबित नहीं होती और क़बूल न करने पर देने वाले का दिल टूटने का अन्देशा भी रहता है। और चूंकि हमारे मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी का दिल तोड़ना पसन्द नहीं करते थे। इस लिये आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद नहीं फ़रमाते। चुनान्चे हमें भी चाहिये कि अगर हमें कोई ख़ुश्बू या सस्ती चीज़ तोह़फ़तन पेश करे तो उसे सुन्नत समझ कर क़बूल कर लेना चाहिये। अगर कोई क़ीमती चीज़ पेश करे तो उसे भी क़बूल करने में कोई ह़रज नहीं मगर ग़ौर कर लेना मुनासिब मा'लूम होता है कि कहीं मुरव्वत वग़ैरा में तो नहीं दे रहा कि येह देना बा'द में ख़ुद उसी पर बार पड़ जाए।

कौन कैसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया

www.dawateislami.net

कि : मर्दाना ख़ुश्बू वोह है कि उस की ख़ुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो।

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجآء فی طیب الرجال والنساء، الحدیث ۲۷۹۶، ج ۴، ص ۳۶۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मर्दों को अपने लिबास पर ऐसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करनी चाहिये जिस की ख़ुश्बू फैले मगर रंग के धब्बे वग़ैरा नज़र न आएं, जैसा कि गुलाब, केवड़ा, सन्दल और इसी क़िस्म के बे रंग इत्रियात। औरतों के लिये महक की मुमा-न-अ़त इस सूरत में है जब कि वोह ख़ुश्बू अज्नबी मर्दों तक पहुंचे, अगर वोह घर में इत्र लगाएं जिस की ख़ुश्बू ख़ावन्द या औलाद या मां बाप तक ही पहुंचे तो ह़रज नहीं।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 113)

मा'लूम हुवा कि इस्लामी बहनों को ऐसी ख़ुश्बू नहीं लगानी चाहिये जिस की ख़ुश्बू उड़ कर ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाए। इस्लामी बहनें ह़दीसे ज़ैल से इब्रत ह़ासिल करें। चुनान्चे : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औरत जब ख़ुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वोह ऐसी और ऐसी है या'नी ज़ानिया है।"

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجآء فی کراہیۃ خروج المرأۃ متعطرۃ، الحدیث ۲۷۹۵، ج ۴، ص ۳۶۱)

ख़ुश्बू की धूनी लेना :

ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कभी कभी ख़ालिस ऊ़द (या'नी अगर) की धूनी लेते। या'नी ऊ़द के साथ किसी दूसरी चीज़ की आमैज़िश नहीं करते और कभी ऊ़द के साथ काफ़ूर मिला कर धूनी लेते और फ़रमाया कि मीठे मीठे म–दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी इसी त़रह़ धूनी लिया करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الالفاظ من الادب وغیرہ، باستعمال المسک وانہ....الخ، الحدیث ۲۲۵۴، ص ۱۲۳۷)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें हमारे प्यारे सरकार, महके महके मदीने के मीठे मीठे ग़म ख़्वार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में मदीनए मुनव्वरह की मुअ़त्तर मुअ़त्तर फ़ज़ाओं और मुअ़म्बर मुअ़म्बर हवाओं में सांस लेने की सआ़दत नसीब फ़रमा और फिर इन्हीं मुअ़त्तर मुअ़त्तर फ़ज़ाओं में मुअ़त्तर मुअ़त्तर हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में आ़फ़ियत के साथ ईमान पर मौत नसीब फ़रमा और जन्नतुल बक़ीअ़ की महकी महकी सर ज़मीन में मदफ़न नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

टूट जाए दम मदीने में मेरा या रब बक़ीअ़

काश ! हो जाए मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 229)

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें

(अज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।** (المعجم الکبیر للطبرانی حدیث ۵۹۴۲ ج۶ص ۱۸۵)

(1) सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा **(2)** लगाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह **(3)** लगाते हुए दुरूद शरीफ़ और **(4)** लगाने बा'द अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن कहूंगा **(5)** मलाएका और **(6)** मुसल्मानों को फ़रह़त पहुंचाऊंगा **(7)** अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शर-ई याद करने और सुन्नतें सीखने पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा, इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उ़म्दा ख़ुश्बू लगाने से अ़क़्ल बढ़ती है **(8)** लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत के गुनाहों से बचाऊंगा (क्यूं कि बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान के बारे में पीछे से म-सलन इस त़रह़ से कहना कि "इस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी," ग़ीबत है) **(9)** मौक़अ़ की मुना-सबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं म-सलन **(10)** नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा **(11)** मस्जिद **(12)** नमाज़े तहज्जुद **(13)** जुमुआ़ **(14)** पीर शरीफ़ **(15)** र-मज़ानुल मुबारक **(16)** ईदुल फ़ित्र **(17)** ईदुल अज़्ह़ा **(18)** शबे मीलाद **(19)** ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **(20)** जुलूसे मीलाद **(21)** शबे मे'राजुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **(22)** शबे

www.dawateislami.net

बराअत **(23)** ग्यारहवीं शरीफ़ **(24)** यौमे रज़ा **(25)** दर्से कुरआन व **(26)** ह़दीस **(27)** तिलावत **(28)** अवरादो वज़ाइफ़ **(29)** दुरूद शरीफ़ **(30)** दीनी किताब का मुत़ा–लआ़ **(31)** तदरीसे इ़ल्मे दीन **(32)** ता'लीमे इ़ल्मे दीन **(33)** फ़तवा नवीसी **(34)** दीनी कुतुब की तस्नीफ़ो तालीफ़ **(35)** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ व **(36)** इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त **(37)** कुरआन ख़्वानी **(38)** दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत **(39)** अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत **(40)** सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त **(41)** आ़लिम **(42)** मां **(43)** बाप **(44)** मोमिने सालेह़ **(45)** पीर साहि़ब **(46)** मूए मुबारक की ज़ियारत और **(47)** मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मवाक़ेअ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है।

जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा सवाब मिलेगा। जब कि निय्यत का मौक़अ़ भी हो और वोह निय्यत शरअ़न दुरुस्त भी हो। ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़ कम दो तीन निय्यतें कर ही लेनी चाहिएं।

www.dawateislami.net

खाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

खाना अल्लाह तआ़ला की बहुत लज़ीज़ ने'मत है। अगर सुन्नते अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ खाना खाया जाए तो हमें पेट भरने के साथ साथ सवाब भी ह़ासिल होगा। इस लिये हमें चाहिये कि सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत डालें। खाना खाने की कुछ सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) **हर खाने से पहले अपने हाथ पहुंचों तक धो लें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो येह पसन्द करे कि अल्लाह तआ़ला उस के घर में ब-र-कत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना ह़ाज़िर किया जाए तो वुज़ू करे और जब उठाया जाए तब भी वुज़ू करे।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، الحدیث ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی लिखते हैं : इस (या'नी खाने के वुज़ू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 32)

(2) **जब भी खाना खाएं तो** उल्टा पाउं बिछा दें और सीधा खड़ा रखें या सुरीन पर बैठ जाएं और दोनों घुटने खड़े रखें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 19)

www.dawateislami.net

(3) **खाने से पहले जूते उतार लें ।** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे लिये राह़त है ।"

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الاطعمۃ، الفصل الثالث، الحدیث ۴۲۴۰، ج۲، ص۴۵۴)

(4) **खाने से पहले** بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم **पढ़ लें ।** ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए उस खाने को शैत़ान अपने लिये ह़लाल समझता है ।" (صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام...الخ، الحدیث ۲۰۱۷، ص۱۱۱۶)

(5) **अगर खाने के शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर** بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ **पढ़ लें ।** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिये कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े । अगर शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो येह कहे "بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ" ।

(سنن ابو داود، کتاب الاطعمۃ، باب التسمیۃ علی الطعام، الحدیث ۳۷۶۷، ج۳، ص۴۸۷)

(6) **खाने से पहले येह दुआ़ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़ह्र भी होगा तो** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **असर नहीं करेगा,**

بِسۡمِ اللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوۡمُ

या'नी अल्लाह के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-र-कत

www.dawateislami.net

से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती। ऐ हमेशा से ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।"

(فردوس الاخبار بماثور الخطاب، الحدیث ۱۹۵۵، ج ۱،ص ۲۷۴)

(7) **सीधे हाथ से खाएं।** हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिये तो सीधे हाथ से पिये कि शैतान उल्टे हाथ से खाता पीता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشرب، الحدیث ۲۰۲۰، ص ۱۱۱۷)

(8) **अपने सामने से खाएं।** हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर शख़्स बरतन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो।" (صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب الاکل ممایلیہ، الحدیث ۵۳۷۷، ج ۳،ص ۵۲۱)

हज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक रोज़ खाना खाते हुए मेरा हाथ पियाले में इधर उधर ह-र-कत कर रहा था (या'नी कभी एक तरफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी तरफ़ से और कभी तीसरी तरफ़ से लुक़्मा उठाया) जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस तरह करते हुए देखा तो फ़रमाया : "ऐ लड़के! बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाएं हाथ से खाया कर और अपने सामने से खाया कर। चुनान्चे इस के बा'द मेरे खाने का तरीक़ा येही हो गया।"

(صحیح البخاری، باب التسمیۃ علی الطعام، ج ۳، الحدیث ۵۳۷۶)

www.dawateislami.net

(9) **खाने में किसी क़िस्म का ऐ़ब न लगाएं** म-सलन येह न कहें कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया है क्यूं कि खाने में ऐ़ब निकालना मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है बल्कि जी चाहे तो खाएं वरना हाथ रोक लें। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐ़ब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते।

(صحیح البخاری، باب ماعاب النبی طعاماً، الحدیث ۵۴۰۹)

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं: "खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर पर भी न चाहिये, मक्रूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है। (सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया वरना नहीं और पराए घर ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसल्मानों की दिल शिकनी है और कमाले ह़िर्स व बे मुरव्वती पर दलील है। "घी कम है या मज़े का नहीं" येह ऐ़ब निकालना है और अगर कोई शै उसे मुज़िर (नुक़्सान देती) है, उसे न खाने के उ़ज़्र के लिये इस का इज़्हार किया न (कि) बत़ौरे त़ा'न व ऐ़ब म-सलन इस में मिर्च ज़ाइद है मैं इतनी मिर्च का आ़दी नहीं तो येह ऐ़ब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त है कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास की जगह हो और इस के सबब दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को और तक्लीफ़ न करनी पड़े म-सलन

www.dawateislami.net

दो क़िस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आ़दी नहीं तो उसे न खाए और वज्ह पूछी जाए बता दे। और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को इस के लिये कुछ और मंगवाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तक्लीफ़ होगी ऐसी ह़ालत में मुरव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे।" وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 21, स. 652)

खाने की 40 निय्यतें

(अज़ शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر للطبرانی،حدیث۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

﴾1,2﴿ खाने से क़ब्ल और बा'द का वुज़ू करूंगा (या'नी हाथ मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लियां करूंगा) ﴾3﴿ इ़बादत ﴾4﴿ तिलावत ﴾5﴿ वालिदैन की ख़िदमत ﴾6﴿ तह़सीले इ़ल्मे दीन ﴾7﴿ सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ात़िर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र ﴾8﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴾9﴿ उमूरे आख़िरत और ﴾10﴿ ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भागदौड़ पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा (येह **निय्यतें** उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए। खू़ब डट कर खाने से उल्टा इ़बादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुज्ह़ान बढ़ता और पेट की

www.dawateislami.net

ख़राबियां जनम लेती हैं) ﴾11﴿ ज़मीन पर ﴾12﴿ दस्तर ख़्वान बिछाने की सुन्नत अदा कर के ﴾13﴿ सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर ﴾14﴿ खाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह और ﴾15﴿ दीगर दुआ़एं पढ़ कर ﴾16﴿ तीन उंग्लियों से ﴾17﴿ छोटे छोटे निवाले बना कर ﴾18﴿ अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा ﴾19﴿ हर दो एक लुक़्मे पर يَا وَاجِدُ पढ़ूंगा ﴾20﴿ जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा ﴾21﴿ रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोड़ूंगा ताकि रोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें ﴾22﴿ हड्डी और गर्म मसा-लह़ा अच्छी त़रह़ साफ़ करने और चाटने के बा'द फेंकूंगा ﴾23﴿ भूक से कम खाऊंगा ﴾24﴿ आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और ﴾25﴿ तीन[3] बार उंग्लियां चाटूंगा ﴾26﴿ खाने के बरतन धो कर पी कर एक गुलाम आज़ाद करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा (احیاء العلوم، ج۲، ص۷) ﴾27﴿ जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा ﴾28﴿ खाने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा ﴾29﴿ ख़िलाल करूंगा।

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

﴾30﴿ दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा ﴾31﴿ मुसल्मानों के क़ुर्ब की ब-र-कतें ह़ासिल करूंगा ﴾32﴿ उन को बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा पेश कर के उन का दिल खुश करूंगा ﴾33﴿ उन के सामने मुस्कुरा कर स-दक़े का सवाब कमाऊंगा ﴾34﴿ खाने की

www.dawateislami.net

निय्यतें और ﴾35﴿ सुन्नतें बताऊंगा ﴾36﴿ मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और ﴾37﴿ बा'द की दुआएं पढ़ाऊंगा ﴾38﴿ गिज़ा का उ़म्दा हि़स्सा म-सलन बोटी वग़ैरा हि़र्स से बचते हुए दूसरों की ख़ाति़र ईसार करूंगा ﴾39﴿ उन को ख़िलाल का तोह़फ़ा पेश करूंगा ﴾40﴿ खाने के हर एक दो लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَا وَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए।

अल्लाह तआ़ला हमें सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

पानी पीने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

पानी बैठ कर, उजाले में देख कर, सीधे हाथ से बिस्मिल्लाह पढ़ कर इस त़रह़ पियें कि हर मर्तबा गिलास को मुंह से हटा कर सांस लें, पहली और दूसरी बार एक एक घूंट पियें और तीसरी सांस में जितना चाहें पियें। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंट की त़रह़ एक ही घूंट में न पी जाया करो बल्कि दो या तीन बार पिया करो और जब पीने लगो तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और जब पी चुको तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा करो।"

(سنن ترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، الحدیث ۱۸۹۲، ج ۳، ص ۳۵۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पीने में तीन बार सांस लेते थे और फ़रमाते थे : "इस त़रह़ पीने में ज़ियादा सैराबी होती है और सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद व ख़ुश गवार है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ التنفس فی الاناء...الخ، الحدیث ۲۰۲۸، ج ۳، ص ۱۱۲۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने और फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابوداود، کتاب الاشربۃ، الحدیث ۳۷۲۸، ج ۳، ص ۴۷۵)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर पानी पीने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ الشرب قائما، الحدیث ۲۰۲۴، ص ۱۱۱۹)

पानी पीने की "15" निय्यतें

(अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

﴾1﴿ इ़बादत ﴾2﴿ तिलावत ﴾3﴿ वालिदैन की ख़िदमत ﴾4﴿ तह़सीले इ़ल्मे दीन ﴾5﴿ सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र ﴾6﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴾7﴿ उमूरे आख़िरत और ﴾8﴿ ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भागदौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा। येह निय्यतें उसी वक़्त मुफ़ीद होंगी जब कि फ़्रीज़ या बर्फ़ का ख़ूब ठन्डा पानी न हो कि ऐसा पानी मज़ीद बीमारियां पैदा करता है। ﴾9﴿ बैठ कर ﴾10﴿ बिस्मिल्लाह पढ़ कर ﴾11﴿ उजाले में देख कर ﴾12﴿ चूस कर ﴾13﴿ तीन सांस में पियूंगा ﴾14﴿ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहूंगा ﴾15﴿ बचा हुवा पानी नहीं फेंकूंगा।

चाय पीने की "6" निय्यतें

﴾1﴿ बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियूंगा ﴾2﴿ सुस्ती उड़ा कर इ़बादत ﴾3﴿ तिलावत ﴾4﴿ दीनी किताबत और ﴾5﴿ इस्लामी मुत़ा-लए़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा ﴾6﴿ पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहूंगा।

www.dawateislami.net

चलने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा ज़िन्दगी के हर शो'बे में हमारी रहनुमाई करती है। मुसल्मान की चाल भी इम्तियाज़ी होनी चाहिये। गिरेबान खोल कर, गले में ज़न्जीर सजाए, सीना तान कर, क़दम पछाड़ते हुए चलना अह़्मक़ों और मग़रूरों की चाल है। मुसल्मानों को दरमियाना और पुर वक़ार त़रीक़े पर चलना चाहिये। चलने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) **अगर कोई रुकावट न हो तो दरमियानी रफ़्तार से रास्ते के कनारे कनारे चलें,** न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप पर जम जाएं और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार मह़सूस हों।

(2) **लफ़ंगों की त़रह़ गिरेबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें** कि येह अह़्मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुए मा'लूम होते थे। (سنن ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی ھدی الرجل، الحدیث ۴۸۶۳، ج۴، ص ۳۴۹)

(3) **राह चलने में परेशान नज़री से बचें** और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में ह़िफ़ाज़त का ज़ियादा इम्कान है।

www.dawateislami.net

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ दरमियाना, तकब्बुर से बिल्कुल पाक चाल चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। और हमें रास्ते के एक त़रफ़, इधर उधर झांके ताके बिग़ैर, सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلّم

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((''مَنْ تَكَفَّلَ لِيْ اَنْ لَّا يَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا، وَاَ تَكَفَّلُ لَهُ بِالْجَنَّةِ''))

या'नी ''जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(''سنن أبي داود''، كتاب الزكاة، باب كراهية المسألة، الحديث: ١٦٤٣، ص١٣٤٦.)

www.dawateislami.net

बैठने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारा उठना बैठना भी सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिये। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ रूए अन्वर कर के बैठा करते थे। ज़हे नसीब हम भी कभी कभी क़िब्ला रू हो कर बैठें तो कभी मदीनए मुनव्वरह की त़रफ़ मुंह कर के बैठें कि येह भी बहुत बड़ी सआदत है काश ! मदीनए पाक की त़रफ़ रुख़ कर के बैठते वक़्त येह तसव्वुर भी बंध जाए और ज़बाने ह़ाल से येह इज़्हार होने लगे :

दीदार के क़ाबिल तो कहां मेरी नज़र है

येह तेरी इनायत है जो रुख़ तेरा इधर है

बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) **सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस त़रह़ बैठना सुन्नत है** (लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है।) (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 378)

(2) **चार ज़ानू** (या'नी पालती मार कर) **बैठना भी नबिय्ये करीम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **से साबित है।**

(3) **जहां कुछ धूप और कुछ छाउं हो वहां न बैठें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : “जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए।”

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، الحدیث ۴۸۲۱، ج ۴، ص ۳۴۴)

(4) **क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें।**

(रसाइले अ़त्तारिय्या, हिस्सा : 2, स. 229)

(5) **बुज़ुर्गों की निशस्त** पर बैठना अदब के ख़िलाफ़ है। **इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत** शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजू-दगी) में भी न बैठे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 369 / 424)

(6) कोशिश करें कि उठते बैठते वक़्त **बुज़ुर्गाने दीन की त़रफ़ पीठ** न होने पाए और पाउं तो उन की त़रफ़ न ही करें।

(7) जब कभी इज्तिमाअ़ या मजलिस में आएं तो **लोगों को फलांग** कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं।

(8) **जब बैठें तो जूते उतार लें** आप के क़दम आराम पाएंगे। (الجامع الصغیر، الحدیث ۵۵۴، ص ۴۰)

(9) **मजलिस से फ़ारिग हो कर येह दुआ़ तीन बार पढ़ लें** तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

www.dawateislami.net

तरजमा : ''سُبحانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ'' तेरी ज़ात पाक है और ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं । (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج۴، ص ۳۴۷)

(10) जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो **ता'ज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है ।** ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम या'नी ता'ज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है बल्कि हु़ज़ूर की सुन्नते क़ौली है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 370)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें उठने बैठने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

लिबास पहनने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह एह्साने अ़ज़ीम है कि उस ने हमें लिबास की दौलत अ़ता की । लिबास से हम सर्दी, गर्मी के अ-सरात से अपनी हि़फ़ाज़त कर सकतें हैं, येह लिबास हमारी ज़ीनत का सबब भी है और सबबे वक़ार भी है । हर क़ौम का जुदा जुदा लिबास होता है, मगर मुसल्मान का लिबास सब से मुमताज़ है । लिबास की चन्द सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) **सफ़ेद लिबास हर लिबास से बेहतर है और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को पसन्द फ़रमाया है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''सफ़ेद लिबास पहनो क्यूं कि येह ज़ियादा साफ़ और पाकीज़ा है और अपने मुर्दों को भी इसी में कफ़्नाओ ।''

(سنن ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی لبس البیاض، الحدیث ۲۸۱۹، ج۴، ص ۳۷۰)

(2) **जब कपड़ा पहनने लगें तो येह दुआ़ पढ़ें, अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे :**

''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّة'' **तरजमा :** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे येह पहनाया और बिग़ैर मेरी कुव्वत व त़ाक़त के मुझे येह अ़ता किया ।

(المستدرک، کتاب اللباس، باب الدعاء عند فراغ الطعام، الحدیث ۷۴۸۶، ج۵، ص ۲۷۰)

www.dawateislami.net

(3) **पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करें** म-सलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाखि़ल करें फिर उल्टी में, इसी त़रह़ पाजामा में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाखि़ल करें और जब उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स करें या'नी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ करें। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब कुर्ता पहनते तो दाह़नी त़रफ़ से शुरूअ़ फ़रमाते। (سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب ما جاء فی الانتعال، الحدیث ۴۱۴۱، ج ۴، ص ۹۶)

(4) **पहले कुर्ता पहनें फिर पाजामा।**

(5) **इ़मामा बांधने की आ़दत डालिये** कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इ़मामा ज़रूर बांधा करो कि येह फ़िरिश्तों का निशान है और इस (के शम्ले) को पीठ के पीछे लटका लो।" (کنز العمال، کتاب المعیشۃ، الحدیث ۴۱۱۳۲، ج ۸، ص ۱۳۳)

इ़मामे के साथ दो रक्अ़तें बिगै़र इ़मामा की सत्तर रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं। (کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، باب العمائم، الحدیث ۴۱۱۳۰، ج ۱۵، ص ۳۳۳)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें फे़शन वाले लिबास से बचा और मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास पहनने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ना'लैन पहनना सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है। जूते पहनने से कंकर, कांटे वग़ैरा चुभने से पाउं की हिफ़ाज़त रहती है। नीज़ मौसिमे सरमा में सर्दी से भी पाउं मह़फ़ूज़ रहते हैं और गर्मियों में धूप में चलने के लिये जूते निहायत ही कारआमद हैं। जूता पहनने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुला-ह़ज़ा हों :

(1) **किसी भी रंग का जूता पहनना अगर्चे जाइज़ है लेकिन पीले रंग के जूते पहनना बेहतर है** कि मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं जो पीले जूते पहनेगा उस की फ़िक्रों में कमी होगी। (کشف الخفاء، الحدیث ۲۵۹۵، ج۲، ص ۲۴۶)

(2) **पहले सीधा जूता पहनें फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारें फिर सीधा।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "(कोई शख़्स) जब जूता पहने तो पहले दाहने पाउं में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पाउं का उतारे।" (سنن ابن ماجہ، کتاب اللباس، باب لبس النعال وخلعہا، الحدیث ۳۶۱۶، ج۴، ص ۱۶۶)

(3) जब बैठें तो जूते उतार लेना सुन्नत है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब बन्दा बैठे तो सुन्नत है कि अपने जूते उतार ले। (سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الانتعال، الحدیث ۴۱۳۸، ج۴، ص ۹۵)

www.dawateislami.net

(4) **जूता पहनने से पहले झाड़ लें** ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए।

(5) **इस्ति'माली जूता उल्टा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये** वरना फ़क़्रो तंगदस्ती का अन्देशा है।

(सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, हिस्सा : 5, स. 601)

बद गुमानी से बचिये

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "बद गुमानी से बचो बेशक बद गुमानी बद तरीन झूट है।"

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب مایخطب علی خطبة اخیه، الحدیث ۵۱۴۳، ج۳، ص۴۴۶)

www.dawateislami.net

सोने जागने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

नींद भी एक त़रह़ की मौत है। जब भी हम सोने लगें तो हमें डर जाना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि आंख ही न खुले और हमेशा हमेशा के लिये ही सोते न रह जाएं। लिहाज़ा रोज़ाना सोने से पहले भी अपने गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये। **प्यारे इस्लामी भाइयो !** अगर हम **सुन्नत के मुत़ाबिक़** दुआ़एं वग़ैरा पढ़ कर सोएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमें सोने का भी कुछ न कुछ फ़ाएदा ह़ासिल हो ही जाएगा। अब **सोने और जागने** के बारे में सुन्नतें और आदाब वग़ैरा बयान की जाती हैं :

(1) **सोने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर बिस्तर को तीन बार झाड़ लें** ताकि कोई मूज़ी शै या कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए।

(2) **सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लेना सुन्नत है।** اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰ **तरजमा :** ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं)

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نام، الحدیث ۶۳۱۲، ج۴، ص۱۹۲)

(3) **उल्टा या'नी पेट के बल न सोएं।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को पेट के बल लैटे हुए देखा तो फ़रमाया : "इस त़रह़ लैटने को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं फ़रमाता।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب النھی عن الاضطجاع علی الوجہ، الحدیث ۳۷۲۳، ج۴، ص۲۱۴)

www.dawateislami.net

(4) **दाईं करवट लैटना सुन्नत है ।** हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपनी ख़्वाब गाह पर तशरीफ़ ले जाते तो अपना सीधा हाथ मुबारक सीधे रुख़्सार शरीफ़ के नीचे रख कर लैटते । (شمائل الترمذی، کتاب الشمائل، باب ماجاء فی صفۃ نوم رسول اللہ ﷺ، الحدیث ۲۵۳، ج۵، ص ۵۴۹)

(5) **कुरआने मजीद** के आदाब में से येह भी है कि इस की त़रफ़ पीठ न की जाए न पाउं फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि खुद ऊंची जगह पर हो और कुरआने मजीद नीचे हो । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 119) हां अगर कुरआने पाक और मुक़द्दस तुग़रे वग़ैरा ऊंची जगह हों तो उस सम्त पाउं करने में मुज़ा-यक़ा नहीं । (الفتاوی الھندیۃ، ج۵، ص ۳۲۲)

(6) **कभी चटाई पर सोएं तो कभी बिस्तर पर कभी फ़र्शे ज़मीन पर ही सो जाएं ।**

(7) **जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़ें :**

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ" **तरजमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نام، الحدیث ۶۳۱۲، ج۴، ص ۱۹۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें कम सोने और सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

मेहमान नवाज़ी करना सुन्नते मुबा-रका है, अहादीसे मुबा-रका में इस के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं बल्कि यहां तक फ़रमाया कि मेहमान बाइसे ख़ैरो ब-र-कत है। एक दफ़्आ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यहां मेहमान हाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़र्ज़ ले कर उस की मेहमान नवाज़ी फ़रमाई। चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुलाम अबू राफ़ेअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, फ़ुलां यहूदी से कहो कि मुझे आटा क़र्ज़ दे। मैं रजब शरीफ़ के महीने में अदा कर दूंगा (क्यूं कि एक मेहमान मेरे पास आया हुवा है) यहूदी ने कहा, जब तक कुछ गिरवी नहीं रखोगे, न दूंगा। हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि मैं वापस आया और ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस का जवाब अर्ज़ किया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वल्लाह ! मैं आस्मान में भी अमीन हूं और ज़मीन में भी अमीन हूं। अगर वोह दे देता तो मैं अदा कर देता।'' (अब मेरी वोह ज़िरह ले जा और गिरवी रख आ। मैं ले गया और ज़िरह गिरवी रख कर लाया)

(المعجم الکبیر، الحدیث ۹۸۹، ج۱، ص ۳۳۱)

मेहमान बाइसे ख़ैरो ब-र-कत है :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जिस घर

www.dawateislami.net

में मेहमान हो उस घर में ख़ैरो ब-र-कत उसी त़रह़ दौड़ती है जैसे ऊंट की कौहान पर छुरी, बल्कि इस से भी तेज़।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۶، ج ۴، ص ۵۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऊंट की कौहान में हड्डी नहीं होती चरबी ही होती है इसे छुरी बहुत जल्द काटती है और उस की तह तक पहुंच जाती है इस लिये इस से तश्बीह दी गई।

मेहमान मेज़बान के गुनाह मुआ़फ़ होने का सबब होता है :

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साह़िबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है।" (کشف الخفا، حرف الضاد المعجمۃ، الحدیث ۱۶۴۱، ج ۲، ص ۳۳)

दस10 फ़िरिश्ते साल भर तक घर में रह़मत लुटाते हैं :

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बराअ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद फ़रमाया, "ऐ बराअ ! आदमी जब अपने भाई की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मेहमान नवाज़ी करता है और इस की कोई जज़ा और शुक्रिया नहीं चाहता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के घर में दस10 फ़िरिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तहलील और तक्बीर पढ़ते और उस के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं। और जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़िरिश्तों की पूरे साल की इ़बादत के बराबर उस के नामए आ'माल में इ़बादत लिख दी जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

www.dawateislami.net

ज़िम्मए करम पर है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ गिज़ाएं "जन्नतुल खुल्द" और न फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाए।"

(کنز العمال، کتاب الضیافۃ،قسم الافعال، الحدیث ۲۵۹۷۲،ج ۹،ص ۱۱۹)

سُبْحٰنَ اللّٰہ, سُبْحٰنَ اللّٰہ ! किसी के घर मेहमान तो क्या आता है गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की छमाछम बरसात शुरूअ़ हो जाती है इस क़दर अज्रो सवाब अल्लाह ! अल्लाह !

मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना सुन्नत है :

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है, ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सुन्नत येह है कि आदमी मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۸،ج ۴،ص ۵۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें मेहमानों की खुशदिली के साथ मेहमान नवाज़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और बार बार हमें मीठे मीठे मदीने की महकी महकी फ़ज़ाओं में मीठे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मेहमान बनने की सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

इमामे के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इमामा शरीफ़ हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है । हमारे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा सरे अक़्दस पर अपनी मुबारक टोपी पर इमामए मुबा-रका को सजा कर रखा । इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, इमामा सुन्नते मु-तवातिरा दाइमा है ।

(फ़तावा र-ज़वियह मुख़र्रजा, जि. 6, स. 208, 209)

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आठ[8] इर्शादात

(1) इमामे के साथ दो रक्अ़तें बिग़ैर इमामा की सत्तर[70] रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं । (فردوس الاخبار، باب الراء، فصل رکعتان، الحدیث ۳۰۵۴، ج ۱، ص ۴۱۰)

(2) इमामे के साथ नमाज़ दस[10] हज़ार नेकियों के बराबर है ।

(فردوس الاخبار، باب الصاد، الحدیث ۳۶۲۱، ج ۲، ص ۳۱)

(3) बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुआ़ के दिन इमामे वालों पर । (الجامع الصغیر، حرف الھمزۃ، الحدیث ۱۸۱۷، ص ۱۱۳)

(4) टोपी पर इमामा हमारा और मुश्रिकीन का फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा इस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़त़ा किया जाएगा । (مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح، کتاب اللباس، الحدیث ۴۳۴۰، ج ۸، ص ۱۴۷)

(5) इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा ।

(المستدرک، کتاب اللباس، باب اعتموا تزدادوا حلما، الحدیث ۷۴۸۸، ج ۵، ص ۲۷۲)

www.dawateislami.net

(6) इमामा मुसल्मानों का वक़ार और अ़रब की इ़ज़्ज़त है तो जब अ़रब इमामा उतार देंगे अपनी इ़ज़्ज़त उतार देंगे।

(فردوس الاخبار، باب العین، الحدیث۴۱۱۱، ج۲،ص۹۱)

(7) ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमामे की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : ''फ़िरिश्तों के ताज ऐसे ही होते हैं।''

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ والعادات، باب آداب التعمم ،الحدیث۴۱۹۰۶ج۱۵،ص۲۰۵)

(8) इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामा के सत्तर70 जुमुआ़ के बराबर है। (فردوس الاخبار، باب الجیم، الحدیث۲۳۹۳، ج۱،ص۳۲۸)

ह़िकायत :

ह़ज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के हु़ज़ूर ह़ाज़िर हुवा वोह इमामा बांध रहे थे जब बांध चुके तो मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात कर के फ़रमाया : तुम इमामे को दोस्त रखते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : इसे दोस्त रखो इ़ज़्ज़त पाओगे और जब शैत़ान तुम्हें देखेगा तुम से पीठ फेर लेगा, ऐ फ़रज़न्द ! इमामा बांध कि फ़िरिश्ते जुमुआ़ के दिन इमामा बांधे आते हैं और सूरज डूबने तक इमामा बांधने वालों पर सलाम भेजते रहते हैं। (फ़तावा र-ज़विय्यह मुख़र्रजा, जि. 6, स. 215)

इमामए मुबा-रका के पेच सीधी जानिब होने चाहिएं चुनान्चे इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इमामा शरीफ़ इस त़रह़ बांधते कि शम्लए मुबा-रका

www.dawateislami.net

सीधे शाने पर रहता। नीज़ बांधते वक़्त उस की गरदिश बाएं (या'नी उल्टे) हाथ से फ़रमाते जब कि सीधा हाथ मुबारक पेशानी पर रखते और इसी से हर पेच की गिरिफ़्त फ़रमाते।

(हयाते आ'ला हज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَہ, जि. 1, स. 144)

इमामे के आदाब :

(1) इमामा सात[7] हाथ (साढ़े तीन गज़) से छोटा न हो और बारह[12] हाथ (छ[6] गज़) से बड़ा न हो।

(مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح، کتاب اللباس تحت الحدیث۴۳۴۰، ج۸، ص۱۴۸)

(2) इमामे के शम्ले की मिक़्दार कम अज़ कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा इतना हो कि बैठने में न दबे।

(फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 22, स. 182, बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, इमामे का बयान, जि. 3, स. 55)

(3) इमामा उतारते वक़्त भी एक एक कर के पेच खोलना चाहिये। इमामा क़िब्ला की त़रफ़ रुख कर के खड़े खड़े बांधे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، باب التاسع فی اللباس...الخ، ج۵، ص۳۳۰)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें इमामे की सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

क़र्ज़ देने के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हर क़र्ज़ स-दक़ा है।" (شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی القرض، الحدیث ۳۵۶۳، ج ۳، ص ۲۸۴)

सरवरे दो आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "मे'राज की रात मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि स-दक़े का हर दिरहम, दस दिरहम के बराबर है और क़र्ज़ का हर दिरहम अठ्ठारह दिरहम के बराबर है। मैं ने पूछा जिब्राईल ! क़र्ज़, स-दक़े से किस वज्ह से अफ़्ज़ल है ? अ़र्ज़ की : साइल सुवाल करता है जब कि उस के पास (माल) होता है और क़र्ज़ त़लब करने वाला अपनी ज़रूरत के लिये क़र्ज़ त़लब करता है।"

(حلیۃ الاولیاء، الحدیث ۱۲۵۴۹، ج ۸، ص ۳۷۴)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जो शख़्स अपने किसी भाई को दो बार क़र्ज़ देगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को एक मर्तबा स-दक़ा करने का सवाब देगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب القرض، الحدیث ۲۴۳۰، ج ۳، ص ۱۵۳)

इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का तक़्वा :

ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक जनाज़ा पढ़ने तशरीफ़ ले गए धूप की बड़ी शिद्दत थी और वहां कोई साया

www.dawateislami.net

भी न था साथ ही एक शख़्स का मकान था। उस मकान की दीवार का साया देख कर लोगों ने इमाम साहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! आप इस साए में खड़े हो जाइये। ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया, कि इस मकान का मालिक मेरा मक़रूज़ है और अगर मैं ने इस की दीवार से कुछ नफ़अ़ ह़ासिल किया तो मैं डरता हूं कि इन्दल्लाह (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक) कहीं सूद लेने वालों में मेरा शुमार न हो जाए, क्यूं कि सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जिस क़र्ज़ से कुछ नफ़अ़ लिया जाए वोह सूद है। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ धूप ही में खड़े रहे।

(تذکرۃ الاولیاء،ص ۱۸۸، وکنز العمال، کتاب الدین، قسم الاقوال، الحدیث ۱۵۵۱۲، ج ۶، ص ۹۹)

अल्लाहु अक्बर ! हमारे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तक़्वा क्या ही ख़ूब था। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہ के दिलों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ कूट कूट कर भरा होता है। इस लिये येह ह़ज़राते मुक़द्दसा क़दम क़दम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरते हैं। अल्लाह तआ़ला की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़ियामत के ग़म से बचने के लिये :

हुज़ूर ताजदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, जिस शख़्स को येह बात पसन्द हो कि अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन ग़म और घुटन से बचाए तो उसे चाहिये कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उस के ऊपर से उतार दे। (या'नी मुआ़फ़ कर दे) (صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، الحدیث ۱۵۶۳، ص ۸۴۵)

www.dawateislami.net

क़र्ज़ बहुत ही बड़ा बोझ है :

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में नमाज़ पढ़ाने के लिये जनाज़ा लाया गया। तो हुज़ूर सय्यिदे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा, इस मरने वाले पर कोई क़र्ज़ तो नहीं है ? अर्ज़ किया गया, हां इस पर क़र्ज़ है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा, इस ने कुछ माल भी छोड़ा है कि जिस से येह क़र्ज़ अदा किया जा सके ? अर्ज़ किया गया, नहीं। तो हुज़ूर सय्यिदे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, तुम लोग इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो (मैं नहीं पढ़ूंगा)। हज़रते मौला अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह देख कर अर्ज़ किया ...., ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस के क़र्ज़ को अदा करने की ज़िम्मादारी लेता हूं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आगे बढ़े और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और फ़रमाया, "ऐ अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अल्लाह तआला तुझे जज़ाए ख़ैर दे। और तेरी जां बख़्शी हो जैसे कि तूने अपने इस मुसल्मान भाई के क़र्ज़ की ज़िम्मादारी ले कर इस की जान छुडाई। कोई भी मुसल्मान ऐसा नहीं है जो अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ से उस का क़र्ज़ा अदा करे मगर येह कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उस को रिहाई बख़्शेगा।"

(السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الضمان، باب وجوب الحق بالضمان، الحدیث ١١٣٩٨، ج٦، ص١٢١)

हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है, वोह शख़्स जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जान दी

www.dawateislami.net

है (या'नी शहीद हुवा है) उस का हर गुनाह मुआ़फ़ हो जाएगा सिवाए क़र्ज़ के। (صحیح مسلم،کتاب الامارۃ،باب من قتل فی سبیل اللہ،الحدیث ۱۸۸۶،ص۱۰۴۶)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो लोगों का माल बत़ौरे क़र्ज़ ले और वोह निय्यत इस के अदा करने की रखता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ से अदा कर देगा। और जिस शख़्स ने माल बत़ौरे क़र्ज़ लिया और निय्यत अदा करने की नहीं रखता तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को इस की वज्ह से तबाह कर देगा।" (صحیح البخاری،کتاب فی الاستقراض......الخ،باب من اخذ اموال الناس.....الخ،الحدیث ۲۳۸۷،ج۲،ص۱۰۵)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! जिस शख़्स ने अपनी जान तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में कुर्बान कर दी उस पर भी अगर किसी का क़र्ज़ा है और वोह अदा कर के नहीं आया है तो वोह मुआ़फ़ न होगा क्यूं कि येह बन्दों के हुक़ूक़ से तअ़ल्लुक़ रखता है। जब तक क़र्ज़ ख़्वाह मुआ़फ़ न करे उस वक़्त तक अल्लाह तआ़ला भी मुआ़फ़ नहीं करेगा।

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें फ़राख़ दिली के साथ ब निय्यते सवाब ह़ाजत मन्दों को क़र्ज़ देने और क़र्ज़दार के साथ नरमी करने और अपने ऊपर आता हुवा क़र्ज़ दियानत दारी से अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

मरीज़ की इयादत करने का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब हमारा कोई मुसल्मान भाई बीमार हो जाए तो हमें वक़्त निकाल कर उस इस्लामी भाई की इयादत के लिये ज़रूर जाना चाहिये कि किसी मुसल्मान की इयादत करना भी बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब का बाइस है।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़म्र और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी मुसल्मान भाई की हाजत रवाई के लिये जाता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रहमत में ग़ोता ज़न रहता है और जब वोह उस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक हज और एक उ़म्रे का सवाब लिखता है और जिस ने **मरीज़ की इयादत** की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक द-रजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रहमत उसे

www.dawateislami.net

ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रखेगी।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی، الحدیث ۱۳،۱۴، ج ۴، ص ۱۶۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मरीज़ की इ़यादत करता है तो एक मुनादी आस्मान से निदा करता है, "ख़ुश हो जा कि तेरा येह चलना मुबारक है और तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مریضاً، الحدیث ۱۴۴۳، ج ۲، ص ۱۹۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मरीज़ों की इ़यादत किया करो और जनाज़ों में शिर्कत किया करो येह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाते रहेंगे।" (المسند للامام احمد، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث ۱۱۱۸۰، ج ۴، ص ۴۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया और सवाब की उम्मीद पर अपने किसी मुसल्मान भाई की इ़यादत की उसे जहन्नम से सत्तर70 साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा।" (سنن ابی داوٗد، کتاب الجنائز، باب فی فضل العیادۃ...الخ، الحدیث ۳۰۹۷، ج ۳، ص ۲۴۸)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी किसी मरीज़ की इ़यादत

www.dawateislami.net

के लिये जाना हो तो मरीज़ से अपने लिये दुआ लाज़िमी करवानी चाहिये कि मरीज़ की दुआ रद नहीं होती चुनान्चे

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ रद नहीं होती।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی...الخ، الحدیث ۱۹، ج ۴، ص ۱۶۶)

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब तुम किसी मरीज़ के पास आओ तो उस से अपने लिये दुआ की दर-ख़्वास्त करो क्यूं कि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की तरह होती है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی عیادۃ المریض، الحدیث ۱۴۴۱، ج ۲، ص ۱۹۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी मरीज़ की इयादत को जाएं तो मरीज़ के लिये भी दुआ करें एक दुआ ह़दीसे मुबा-रका में ता'लीम फ़रमाई गई है हो सके तो येह दुआ ही पढ़ लें।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने

www.dawateislami.net

किसी ऐसे मरीज़ की इ़यादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मर्तबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा ।

اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَکَ

तरजमा : मैं अ़-ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं ।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، الحدیث ۳۱۰۶، ج۳، ص ۲۵۱)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इ़यादत की सुन्नत पर भी अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

ماٰخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب کا نام	مصنف/مولف	مطبوعہ
۱	قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن لاہور
۲	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خاں علیہ الرحمہ	ضیاء القرآن لاہور
۳	الجامع لاحکام القرآن تفسیر قرطبی	محمد بن احمد انصاری القرطبی رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۴	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۵	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج رحمۃ اللہ علیہ	دار ابن حزم بیروت
۶	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۷	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ علیہ	دار احیاء التراث العربیہ بیروت
۸	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ علیہ	دار المعرفہ بیروت
۹	مؤطا للامام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ علیہ	دار المعرفہ بیروت
۱۰	الجامع الصغیر	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۱۱	مجمع الزوائد	نور الدین علی بن ابی بکر رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۱۲	المعجم الکبیر	امام سلیمان احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۱۳	کنز العمال	علامہ علاؤ الدین علی متقی بن حسام الدین	دار الکتب العلمیہ بیروت
۱۴	المعجم الاوسط	امام سلیمان بن احمد رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۱۵	کشف الخفاء	اسماعیل بن محمد بن عبد الهادی	دار الکتب العلمیہ بیروت
۱۶	المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن محمد عبد اللہ حاکم	دار المعرفہ بیروت
۱۷	مشکاۃ المصابیح	امام محمد بن عبد اللہ خطیب رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۱۸	المسند للامام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۱۹	شعب الایمان	امام احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۲۰	الترغیب والترہیب	امام عبد العظیم بن القوی رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۲۱	شرح السنہ للامام بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی علیہ الرحمہ	دار الکتب العلمیہ بیروت

www.dawateislami.net

۲۲	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہر دار رحمۃ اللہ علیہ	دار الفکر بیروت
۲۳	الموضوعات الکبریٰ	الامام ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی علیہ الرحمۃ	دار الفکر بیروت
۲۴	سنن دارمی	امام عبداللہ بن عبدالرحمٰن رحمۃ اللہ علیہ	باب المدینہ کراچی
۲۵	ریاض الصالحین	امام یحییٰ بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ	دار السلام ریاض
۲۶	ردالمحتار مع درمختار	علامہ علاؤالدین محمد بن علی الحصکفی	دار المعرفہ بیروت
۲۷	فتاوی عالمگیری	شیخ نظام الدین و جماعۃ من علماء الھند	مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ
۲۸	فتاویٰ رضویہ	امام احمد رضا خاں رحمۃ اللہ علیہ	مکتبہ رضویہ کراچی
۲۹	بہار شریعت	مفتی امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبہ رضویہ کراچی
۳۰	احیاء علوم الدین	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۳۱	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث سمرقندی رحمۃ اللہ علیہ	دار ابن کثیر بیروت
۳۲	جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خاں نعیمی	قادری پبلشرز لاہور
۳۳	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا
۳۴	وسائل الوصول	علامہ یوسف بن اسماعیل رحمۃ اللہ علیہ	دار المنہاج بیروت
۳۵	الحصن الحصین	علامہ محمد بن الجزری رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ العصریہ بیروت
۳۶	شرح الشفاء الباب	ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۳۷	کیمیائے سعادت	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ	کتب خانہ ہائی ایران
۳۸	اسرار اولیاء	فرید الدین گنج شکر رحمۃ اللہ علیہ	کتب خانہ ہائی ایران
۳۹	حلیۃ الاولیاء	امام احمد بن عبداللہ رحمۃ اللہ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
۴۰	تذکرۃ الاولیاء	فرید الدین عطار رحمۃ اللہ علیہ	انتشارات گنجینہ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा 245 कुतुबो रसाइल मअ़ अ़न्क़रीब आने वाली 16 कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

उर्दू कुतुब

(1) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء)

(2) करन्सी नोट के मसाइल (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم)

(3) दुआ़ के फ़ज़ाइल (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء)

(4) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد)

(5) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق)

(6) अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हिस्से)

(7) शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء)

(8) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(9) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़)

(10) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي)

(11) हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد)

(12) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال)

(13) औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد)

(14) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान)

(15) अल वज़ी-फ़तुल करीमा

(16) कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान

(17) ह़दाइक़े बख़्शिश

अ़-रबी कुतुब

18، 19، 20، 21، 22......جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی والثالث والرابع والخامس) (کل صفحات 570، 672، 713، 650، 483)

23......اَلتَّعْلِیْقُ الرَّضْوِی عَلٰی صَحِیْحِ الْبُخَارِی (کل صفحات:458)

24......کِفْلُ الْفَقِیْهِ الْفَاهِم (کل صفحات:74) 25......اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِیْنَة (کل صفحات:62)

26......اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِیَّة (کل صفحات:93) 27......اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (کل صفحات:46)

28......تَمْهِیْدُ الْاِیْمَان (کل صفحات:77) 29......اَجْلَی الْاِعْلَام (کل صفحات:70)

30......اِقَامَةُ الْقِیَامَة (کل صفحات:60)

www.dawateislami.net

शो'बए तराजिमे कुतुब

(1) अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द
(2) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَر)
(3) म-दनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِىْ حُكْمِ النَّبِىِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر)
(4) सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِى الْخِصَالِ الْمُوْجِبَة لِظِلِّ الْعَرْش)
(5) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن)
(6) नसीह़तों के म-दनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة)
(7) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح)
(8) इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَامِ اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة)
(9) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(10) जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(11) फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر)
(12) दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل)
(13) राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم)
(14) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए अव्वल)
(15) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम)
(16) एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء)
(17) ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق)
(18) अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة)
(19) शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ)
(20) हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق)
(21) आंसूओं का दरिया (بَحْرُ الدُّمُوْع)
(22) आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِى الدِّيْن)
(23) शाहराहे औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن)
(24) बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الْوَلَد)
(25) اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر
(26) इस्लाहे आ'माल (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة)
(27) आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِىْ طَلَبِ الْحَدِيْث)
(28) एह़याउल उ़लूम मुतर्जम (जिल्द अव्वल) (احياء علوم الدين)
(29) क़ूतुल क़ुलूब मुतर्जम (जिल्द अव्वल)

www.dawateislami.net

शो'बए इस्लाही कुतुब

(01) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हालात
(02) तकब्बुर
(03) 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
(04) बद गुमानी
(05) क़ब्र में आने वाला दोस्त
(06) नूर का खिलोना
(07) आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिशें
(08) फ़िक्रे मदीना
(09) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?
(10) रियाकारी
(11) क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत
(12) उ़श्र के अह़काम
(13) तौबा की रिवायात व ह़िकायात
(14) फ़ैज़ाने ज़कात
(15) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार
(16) तरबिय्यते औलाद
(17) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ?
(18) टीवी और मूवी
(19) त़लाक़ के आसान मसाइल
(20) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(21) फ़ैज़ाने चेहल अह़ादीस
(22) शर्ह़े श-ज-रए क़ादिरिय्या
(23) नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल
(24) ख़ौफ़े ख़ुदा
(25) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत
(26) इन्फ़िरादी कोशिश
(27) आयाते क़ुरआनी के अन्वार
(28) नेक बनने और बनाने के त़रीक़े
(29) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम
(30) ज़ियाए स-दक़ात

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हि़फ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net